समकालीन साहित्य, संस्कृति,
कला और विचार का मासिक

उत्तर प्रदेश

जनवरी—2026, वर्ष 50

₹ 15/-

नया साल आए

—दुष्यंत कुमार

नया साल आए, नया दर्द आए।
मैं डरता नहीं हूं, हवा सर्द आए,
रहे हड्डियों में जरा भी जो ताकत।
रहे पथ सलामत, रहे पथ सलामत।
बड़ी गर्द आए, पड़ी गर्द आए।
मुझे यह पता है, कि हर प्यार है गम
इसी से नहीं दुःख या है तो बहुत कम
हरेक दर्द गाना, हरेक दर्द प्यार
हरेक विघ्न—मक्खी शहद की भनक
सलामत रहे पंथ भी, दर्द भी
जहां चार बर्तन है होगी खनक!
नया साल आए, अंधेरा बढ़े,
दर्द तेरा बढ़े, दर्द मेरा बढ़े,
उम्र घटती रहे यूं ही इस दर्द की
रास्तों पर अंधेरा, सवेरा बढ़े।
हां, नया साल आए उजाला मिले।
भूला—भटका हुआ साथ वाला मिले
उम्र की ट्रेन में जिंदगी का सफर
कट सके मौज से वह रिसाला मिले...।

साभार

उत्तर प्रदेश

❑ वर्ष 50 ❑ अंक 83
❑ जनवरी–2026

अनुक्रम

लेख

- भगवान बिरसा मुंडा : जनजातीय नवजागरण की ज्योति ❑ डॉ. शिवानी कटारा / 3

आलेख

- झड़बेरी का दिल ❑ पूनम पांडे / 6

कहानियाँ

- विरासत ❑ रतन खंगारोत / 8
- आत्मनिर्भरता ❑ डॉ. प्रियंका पाठक / 12
- तेरा मेरा साथ ❑ रेखा भारती मिश्रा / 16
- लाल चूनर ❑ अलका अस्थाना / 20

कविताएँ

- नया साल आए ❑ दुष्यंत कुमार / आवरण–2
- मनसर ❑ एस.एन. सिंह 'अघोर' / आवरण–3
- माघ मेला स्नान पर्व ❑ डॉ. प्रवीण कुमार श्रीवास्तव / 24
- कल हमारा है ❑ डॉ. रविशंकर पांडेय / 26
- माँ अब भी वहीं है... ❑ तसनीम असलम / 27
- ग़ज़ल ❑ संजय कुमार 'साहिल' / 28
- मन की राहें ❑ विमल किशोर श्रीवास्तव / 29
- जीवन की तरावट ❑ बिपिन चन्द्र जोशी / 30

पुस्तक समीक्षा

- बूढ़ी हुई उटंगन ❑ डॉ. कंचन गुप्ता

संरक्षक एवं मार्गदर्शक : ❑ **संजय प्रसाद**
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी : ❑ **विशाल सिंह**
सूचना निदेशक, उत्तर प्रदेश

❑ **अरविन्द कुमार मिश्र**
अपर निदेशक, सूचना

❑ **चन्द्र विजय वर्मा**
सहा. निदेशक (प्रकाशन)

उप सम्पादक सूचना : ❑ **दिनेश कुमार गुप्ता**

सहयोग : ❑ **अजय कुमार द्विवेदी**
सहयुक्त सम्पादक

भीतरी रेखांकन : **आस्था / रीतिका / वन्दना**

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
ईमेल : **upmasik@gmail.com**

दूरभाष : कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 2236198, 2239011

पत्रिका information.up.nic.in वेबसाइट पर उपलब्ध है।

❑ एक प्रति का मूल्य : पंद्रह रुपये
❑ वार्षिक सदस्यता : एक सौ अस्सी रुपये
❑ द्विवार्षिक सदस्यता : तीन सौ साठ रुपये
❑ त्रैवार्षिक सदस्यता : पांच सौ चालीस रुपये

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे मासिक पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
–सम्पादक

आवर्तन

2025 अतीत की स्मृतियां बन गया है और वर्ष 2026 ने हमारे आंगन में दस्तक दे दी है। हर व्यक्ति यही चाहता है कि आने वाला वर्ष पिछले वर्ष से बेहतर हो। जीवन निरंतर प्रगति का ही नाम है। वर्ष 2025 आर्थिक प्रगति और सामाजिक सांस्कृतिक सरोकारों के लिए जाना जाएगा। 2025 भारत के लिए उपलब्धियों और चुनौतियों से ओत–प्रोत रहा देश ने आर्थिक और खेल जगत में नए कीर्तिमान स्थापित किए और पूरे विश्व को चकित कर दिया। भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा। खेलों में भारत की बेटियों ने क्रिकेट में पहला विश्व कप जीतकर यह साबित कर दिया कि अवसर मिलें तो भारत की बेटियां विश्व में नए कीर्तिमान बना सकती हैं। स्वामी विवेकांनद का कहना था कि, जिस प्रकार एक पक्षी केवल एक पंख के सहारे नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार संसार का कल्याण तब तक संभव नहीं है जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार न हो। 12 जनवरी को स्वामी विवेकानंद के जन्मदिवस पर युवा दिवस मनाया जाता है। हमारा देश त्योहारों का देश है। यहां पर लोहड़ी, सक्रांति और पोंगल जनवरी माह में मनाए जाते हैं। ये तीनों ही पर्व सूर्य देव की गति और प्रकृति के चक्र से गहराई से जुड़े हुए हैं। 23 जनवरी को सुभाषचंद्र बोस की जयंती मनाई जाती हैं। 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' और 'दिल्ली चलो' जैसे नारे देने वाले सुभाषचंद्र युवाओं के प्रेरणास्रोत हैं। 26 जनवरी हमारे देश का राष्ट्रीय पर्व है। इस बार देश अपना 77वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। 26 जनवरी सन् 1950 से लेकर आज तक देश ने अनेक सफलताएं प्राप्त की हैं। ज्ञान–विज्ञान, प्रौद्योगिकी, साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपर्व परिवर्तन हुए हैं। देश ने चंद्रयान और मंगलयान तक का सफर तय किया है। ग्रुप कैप्टन शुंभाशु शुक्ला Axiom-4 मिशन के तरह अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर जाने वाले पहले भारतीय बने । इस बार 26 जनवरी की परेड में कई नई चीजें देखने को मिलेंगी, इनमें स्वदेशी हथियारों का प्रदर्शन और भारत के विकसित रोडमैप की जानकारी होगी। यह हर भारतीय के लिए बेहद गर्व की बात है।

इस बार 10 जनवरी से 18 जनवरी तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में स्थित भारत मंडपम् में विश्व पुस्तक मेला का आयोजन किया जाएगा। पुस्तकें साहित्यकारों और पाठकों का प्रिय स्थल है। बदलते समय के साथ पुस्तक जगत में भी क्रांति आई है। आज किंडल, कोबो, गूगल बुक्स ने पुस्तकों की दशा और दिशा बदल दी है। जनवरी माह में जैनेंद्र कुमार, भीष्म साहनी, जावेद अख्तर, कुर्रतुलऐन हैदर, जयशंकर प्रसाद, ई.एम.फ़ोस्टर, वर्जीनिया वुल्फ आदि के जन्मदिवस आते हैं। 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाया जाता है ताकि हिंदी का प्रचार–प्रसार पूरे विश्व में हो।

इस माह की पत्रिका में आपके लिए लेख, कहानियां, कविताएं, पुस्तक समीक्षा सभी कुछ है। पत्रिका पढ़कर अपनी बेशकीमती राय से हमें अवश्य अवगत कराइएगा। आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। आपका घर–आंगन खुशियों से झिलमिलाए, सितारों से जगमगाए।

दिनेश कुमार गुप्ता

भगवान बिरसा मुंडा : जनजातीय नवजागरण की ज्योति

❑ डॉ. शिवानी कटारा

भारत का स्वातंत्र्य संग्राम अंग्रेजी शासन के विरुद्ध लंबे समय से अंकुरित चेतना का परिणाम था, जो 1857 के महाविद्रोह में प्रज्वलित ज्वाला बन उठी–एक ऐसी ज्वाला, जिसने देशभर में प्रतिरोध की मशालें जगा दीं। कहीं सत्याग्रह की धीमी आहट, तो कहीं संघर्ष की उग्र गूँज, असंख्य वीरों ने अपने–अपने प्रदेश में इस लड़ाई को स्वर, संबल और सार दिया। इन्हीं उज्ज्वल नायकों में एक तेजस्वी दीप्ति थे बिरसा मुंडा । वर्ष 2025 उनका 150वां जन्मवर्ष है–एक ऐसा शुभ क्षण, जब इतिहास हमें उनके पदचिह्नों की ओर पुनः लौटने हेतु आमंत्रित करता है।

15 नवम्बर, 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भगवान बिरसा मुंडा पर आधारित स्मारक सिक्के और डाक–टिकट का लोकार्पण किया गया–यह केवल एक औपचारिक कार्य नहीं, बल्कि भारत की जनजातीय विरासत के प्रति राष्ट्र के सामूहिक सम्मान का पुनः उद्घोष था। इसी ऐतिहासिक क्षण से भगवान बिरसा मुंडा का जन्मदिवस जनजातीय गौरव दिवस के रूप में राष्ट्रव्यापी उत्सव बनकर उभरा–एक ऐसा पर्व, जिसने गौरव, प्रगति और सशक्तिकरण की नई गाथा को जन्म दिया। यह दिवस हमें स्मरण कराता है कि भारत की आत्मा को सदैव उसकी जनजातीय परंपराओं की सरलता, साहस और प्रकृति–निष्ठ जीवन ने ही सच्चे अर्थों में समृद्ध किया है।

भगवान बिरसा मुंडा : उलिहातू से उलगुलान तक–एक अमर गाथा

झारखण्ड के छोटानागपुर पठार का शांत, हरा–भरा गांव– उलिहातू। यही वह धरती है, जहाँ 15 नवंबर, 1875 को जन्मा एक बालक आगे चलकर आदिवासी अस्मिता का प्रतीक, औपनिवेशिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का शंखनाद और वनवासी समाज के परम प्रेरणास्रोत भगवान बिरसा मुंडा बना। मुंडा जनजाति से आने वाले इस बालक का बचपन कठिनाई, विस्थापन और अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीतियों की मार सहते समाज के बीच बीता। 1793 के 'परमानेंट सेटलमेंट एक्ट' ने आदिवासियों की परंपरागत 'खुंटकाटी' भूमि व्यवस्था को नष्ट कर दिया, और सूदखोरों, जमींदारों व दखलदारों को वनवासियों की भूमि हड़पने का अवसर मिल गया।

बिरसा के जीवन में निर्णायक मोड़ तब आया जब 1886 से 1890 के बीच वे चाईबासा में अध्ययन हेतु रहे। स्थानीय शिक्षक जयपाल नाग ने उनकी प्रतिभा पहचानकर उन्हें जर्मन मिशन स्कूल भेजा। पर वहाँ प्रवेश हेतु ईसाई धर्म स्वीकारना अनिवार्य था। कुछ समय तक पढ़ाई करने

के बाद बिरसा ने मिशनरी नियंत्रण से असहमति जताई और विद्यालय छोड़ दिया। यह केवल शिक्षा का त्याग नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक स्वाभिमान और आत्मसम्मान का जागरण था। आगे चलकर वैष्णव भक्त आनंद पांडे के संपर्क में आने पर उन्होंने दीक्षा ली, जनेऊ धारण किया, तुलसी की पूजा प्रारम्भ की, मांसाहार त्यागा और रामायण–महाभारत सहित हिन्दू शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। यह आध्यात्मिक पुनर्जागरण भविष्य के उनके नेतृत्व के लिए आधार बना।

इसी काल में उन्होंने अपने समाज के भीतर व्याप्त अंधविश्वास, जादू–टोना और नशीली आदतों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने प्रार्थना, नैतिक जीवन, अनुशासन और सामूहिकता को अपनाने की प्रेरणा दी। उनके व्यक्तित्व में ऐसी आध्यात्मिक ऊर्जा और सत्यनिष्ठा थी कि लोग उन्हें दैवीय शक्ति का अवतार मानने लगे। इसी सांस्कृतिक चेतना का परिणाम था 'बिरसाइत' पंथ, जिसे मुंडा, उरांव और खड़िया जनजातियों ने व्यापक रूप से स्वीकार किया।

उलगुलान : प्रतिरोध, पहचान और पुनर्जन्म

जब एक ओर धर्मांतरण का दबाव बढ़ रहा था, और दूसरी ओर जमींदारों व सूदखोरों द्वारा निर्बल वनवासियों की भूमि छीनी जा रही थी, तब बिरसा का मन विद्रोह से भर उठा। अंग्रेजी शासन की क्रूर नीतियाँ, लगान का बोझ और जंगलों पर प्रतिबंध आदिवासी समाज को तोड़ रहे थे। बिरसा ने इसी समय वह पुकार लगाई– "अबुआ राज सेतेर जना, महारानी राज तुंदु जना"– अर्थात् "रानी का राज समाप्त हो, हमारा राज स्थापित हो।" यह नारा झारखण्ड, बिहार, ओड़िसा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ तक गूँज उठा।

धर्मांतरण के विरुद्ध भी उनका संघर्ष सशक्त था। उन्हें ज्ञात था कि धर्म परिवर्तन केवल आस्था का परिवर्तन नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा और सामूहिक पहचान के विघटन का मार्ग है। इसलिए उन्होंने वनवासियों को अपने मूल धर्म और इतिहास से पुनः जुड़ने का आह्वान किया। 1895 में जब उन्होंने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक चेतना का संगम बनाकर एक व्यापक आंदोलन खड़ा किया, तब अंग्रेज शासन चिंतित हो उठा। शीघ्र ही उन्हें गिरफ्तार कर हजारीबाग सेंट्रल जेल भेजा गया, जहाँ उन्होंने दो वर्ष बिताए। किंतु जब वे रिहा हुए, तो हजारों लोग उन्हें देखने उमड़ पड़े। उन्हें 'धरती आबा' (पृथ्वी का पिता) कहकर सम्मानित किया गया।

इसके बाद शुरू हुआ वह ऐतिहासिक दौर, जिसे दुनिया 'उलगुलान–महाविद्रोह' के नाम से जानती है। 1899–1900 के इन महीनों में हजारों आदिवासी जल, जंगल, जमीन और अपनी पहचान बचाने के लिए एकजुट हुए और हथियारबंद प्रतिरोध की राह पर निकल पड़े। गाँवों–जंगलों में एक ही आवाज गूंजने लगी– "अबुआ दिशोम, अबुआ राज" –हमारा देश, हमारा शासन। लोग संगठित होते गए, एक नई चेतना फैलती गई। आंदोलन का लक्ष्य भी उतना ही साफ था– अपनी जमीन वापस पाना, अंग्रेजी करों का विरोध करना और अपनी स्वायत्त सत्ता कायम करना। धीरे–धीरे यह प्रतिरोध गुरिल्ला युद्ध में बदल गया। बिरसा और उनके साथी पुलिस थानों, अंग्रेजी दफ्तरों और जमींदारों की कोठियों पर अचानक हमले करते–जंगलों से उठी यह लपट ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक सीधी चुनौती थी। इस विद्रोह ने अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी। इसी संघर्ष का प्रभाव था कि 1908 में 'छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम' अस्तित्व में आया, जिसने आदिवासी भूमि अधिकारों को कानूनी संरक्षण प्रदान किया। उलगुलान को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने बिरसा की गिरफ्तारी पर 500 रुपये का इनाम घोषित किया। दुमारी पहाड़ी पर अंग्रेजों ने जलियांवाला बाग जैसी क्रूरता दिखाई और सैकड़ों आदिवासी मार दिए। अंततः 3 मार्च, 1900 को बिरसा को चक्रधरपुर के जामकोपाई जंगल में अपने 460 साथियों के साथ सोते समय गिरफ्तार कर लिया गया। कई साथियों को मृत्यु दंड, आजीवन कारावास और लंबी कैद की सजा दी गई।

9 जून, 1900 को रांची जेल में बिरसा की मृत्यु हुई। अंग्रेजों ने हैजा बताया, परन्तु व्यापक विश्वास यह रहा कि उन्हें धीमा जहर देकर मार दिया गया। केवल 25 वर्ष की छोटी–सी आयु में यह अद्भुत ज्योति तो बुझ गई, पर उसका तेज आज भी सामाजिक चेतना, न्याय और अस्मिता के दीप की तरह जल रहा है। वर्ष 2000 में उनके जन्मदिवस पर झारखण्ड राज्य की स्थापना उनके संघर्ष को राष्ट्रीय सम्मान देने का प्रतीक बनी। उलिहातू से उठी यह ज्योति जिसने उलगुलान का बिगुल बजाया, आज भी हर वनवासी, हर भारतीय के भीतर न्याय, गौरव और स्वतंत्रता की लौ प्रज्वलित करती है–अमर और अविराम।

सशक्त होता जनजातीय भारत : शिक्षा, उद्यमिता और आत्मसम्मान

भगवान बिरसा मुंडा के समानता, स्वाभिमान और आत्मनिर्भरता के स्वप्न को साकार करने के लिए भारत सरकार ने पिछले वर्षों में जनजातीय समुदायों के सर्वांगीण उत्थान हेतु अनेक ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। शिक्षा,

स्वास्थ्य, उद्यमिता, आधारभूत सुविधाओं और सांस्कृतिक संरक्षण पर केंद्रित ये प्रयास आज एक नये जनजातीय नवजागरण का स्वरूप धारण कर चुके हैं। 2023 में जनजातीय गौरव दिवस पर शुरू हुआ 'प्रधानमंत्री जनमन अभियान' इसका प्रमुख उदाहरण है। ₹24,000 करोड़ के इस महाअभियान का उद्देश्य 18 राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश में निवासरत 75 विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों तक आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, जल और सड़क जैसी मूल सुविधाएँ पहुँचाना है। इसके साथ ही 2 अक्टूबर, 2025 को बिरसा मुंडा की धरती से शुरू हुआ 'धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान' (DAJGUA) 63,000 जनजातीय गाँवों को सड़क, मोबाइल नेटवर्क और पक्के आवासों से जोड़ रहा है, जिससे पाँच करोड़ से अधिक जनजातीय नागरिक लाभान्वित होंगे। दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने हेतु 23 मोबाइल मेडिकल यूनिटें कार्यरत हैं और 30 नई इकाइयाँ जोड़ी जा रही हैं। विकसित भारत 2047 के संकल्प में सिकल सेल एनीमिया के पूर्ण उन्मूलन को विशेष प्राथमिकता दी गई है, क्योंकि इसका सर्वाधिक प्रभाव हमारे जनजातीय समुदायों पर ही पड़ता है।

शिक्षा को जनजातीय सशक्तीकरण का आधार बनाते हुए देशभर में 700 से अधिक 'एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय' स्थापित किए जा रहे हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा पर विशेष बल देकर जनजातीय युवाओं को चिकित्सा, इंजीनियरिंग और आधुनिक पेशों की ओर प्रेरित किया जा रहा है। 30 लाख से अधिक जनजातीय विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ मिल रही हैं, जिनमें अनेक विदेशों में भी अध्ययनरत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) मातृभाषा–आधारित शिक्षण को बढ़ावा देकर जनजातीय बच्चों के लिए सीखने की प्रक्रिया को सहज बना रही है। उद्यमिता के क्षेत्र में 'वन धन मिशन' ने जनजातीय जीवन में नई आर्थिक ऊर्जा भरी है। 3,000 से अधिक 'वन धन' विकास केंद्र वनोपज के प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और विपणन को सुदृढ़ कर रहे हैं। लगभग 90 लघु वनोपज अब न्यूनतम समर्थन मूल्य के दायरे में हैं, जिससे लाखों परिवारों को उचित आय मिल रही है। 'अंतरराष्ट्रीय बाजरा वर्ष' ने बाजरे जैसे पोषक और पारंपरिक अनाजों को पुनर्जीवित कर जनजातीय किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 50,000 से अधिक 'वन धन' स्वयं सहायता समूहों और 80 लाख SHG नेटवर्क ने जनजातीय महिलाओं को आर्थिक नेतृत्व प्रदान किया है।

'प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना' परंपरागत कारीगरों को कौशल, वित्तीय सहायता और विपणन सहयोग देकर उनकी विरासत को आधुनिक अवसरों से जोड़ रही है। संस्कृति और इतिहास के संरक्षण के लिए देशभर में जनजातीय संग्रहालयों और शोध संस्थानों की स्थापना हो रही है–जैसे रांची का बिरसा मुंडा स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय, राष्ट्रपति भवन का जनजातीय दर्पण, तथा छिंदवाड़ा और जबलपुर के नये केंद्र। श्रीनगर और गंगटोक में स्थापित ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट भाषाओं, कला और लोकज्ञान के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

खूँटी, झारखण्ड से आरंभ हुई 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' ने जनजातीय क्षेत्रों में योजनाओं की अंतिम छोर तक पहुँच सुनिश्चित की–जहाँ स्कूल नामांकन, सिकल सेल जाँच और वन धन उद्यमिता को विशेष प्राथमिकता दी गई। जनजातीय कार्य मंत्रालय का 2024–25 का बजट 74% बढ़कर ₹13,000 करोड़ हुआ है, और पिछले दशक में 100 से अधिक जनजातीय हस्तियों को पद्म सम्मान देकर राष्ट्र ने उनके योगदान को गौरवपूर्वक स्वीकार किया है। बिरसा की स्मृति को सम्मान देने हेतु रांची का बिरसा मुंडा एयरपोर्ट, सिंदरी का बिरसा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय तथा अनेक शिक्षण संस्थानों की स्थापना हुई–और वे पहले जनजातीय नेता बने, जिनका चित्र 1989 में संसद भवन में लगाया गया। इन पहलों के माध्यम से एक सशक्त, शिक्षित और आत्मनिर्भर जनजातीय भारत आकार ले रहा है–जिसका सपना कभी भगवान बिरसा मुंडा ने देखा था।

विकसित भारत 2047 की ओर बढ़ते राष्ट्र के लिए हमारे जनजातीय पूर्वजों की आत्मा आज भी प्रगति–पथ पर एक उज्ज्वल प्रकाशस्तंभ की तरह चमकती है। विकास की सार्थकता तभी परिलक्षित होती है जब परंपरा और परिवर्तन, जड़ों और आकांक्षाओं के बीच एक सहज सामंजस्य प्रवाहित हो। एक भारत, श्रेष्ठ भारत का स्वप्न भी तभी पूर्णता को पहुँचेगा जब जनजातीय समुदाय समान गति से उन्नयन की ओर अग्रसर होंगे–क्योंकि उनकी समृद्धि ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति है, और उनका गौरव युगों–युगों तक भगवान बिरसा मुंडा की प्रेरणा से आलोकित होता रहेगा। ◆

(लेखक दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से पीएचडी हैं और सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं)

झड़बेरी का दिल

❑ पूनम पांडे

आजकल दिसंबर की मुलायम धूप दादी, बुआ सी सजीली और आत्मीय लगती है। मानो बाल सहला रही हो। खुमारी आने पर थपकी दे रही हो। धूप का आलिंगन और छत पर बैठना दोनों सुकून से भर देते हैं।

इसलिए घर की छत से धूप सेंकते हुए अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है।

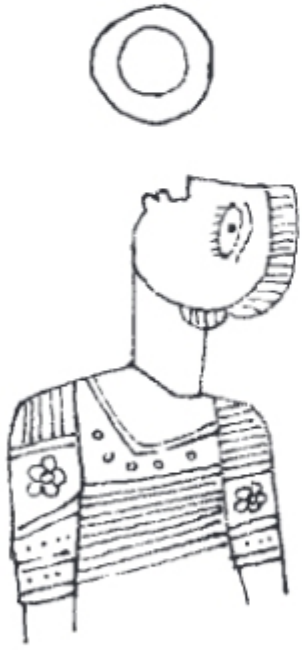

छत से सामने की एक सड़क बिलकुल साफ दिखाई देती है, इस गली के कई मकानों के पीठ पीछे से अधिकतर एक खामोशी सी ओढ़े हुए, यह सड़क चिल्लपों करते वाहनों के शोर से परे, कई बार किसी साफ सुथरी, कल–कल बहती नदी सी लगने लगती है। अब यह उस सूनी सड़क की खुशनसीबी ही थी कि इसके किनारे पर एक बेर का झाड़ पनपा और हाथ पैर फैलाकर वयस्क हो गया, अब वो भी छत से ही साफ दर्शन देता है, जैसे कोई तपस्वी बैठा हो साधना में, कहीं से कोई दखलअंदाजी न होती देखकर यह झाड़ फैलता चला जा रहा है। कितना खुश है बेरी का यह झाड़ कि अपनी तनहाई से तंग तक नहीं है। हो सकता है कि कहीं किसी लाउडस्पीकर से सुन लिया होगा इसने कि बर्बाद करने वाली खराब संगत से एकांत सौ गुना अच्छा होता है। कभी–कभार रास्ता भटक गई किसी बड़ी गाड़ी के आने से जब यहां इस सड़क की मिट्टी, कभी–कभी सड़क पर से ऊपर को उड़ती तो उसी धूल को अपने आगोश में लेकर यह झाड़ कितना खुश हो जाता है, तब तो इसके पोर–पोर को तो सुर, लय, ताल मिल जाती है दूर से ऐसा लगता है जैसे झूम रहा हो। इस समय यह आनंद में लीन है, कहीं न कहीं से मेहरबानी का कोई झोंका इसके मन को छू गया है। यह इसके हल्के हिलने–डुलने से साफ–साफ पता लगता है। अकेले हैं पर तनहा नहीं हैं, ऐसा मंत्र है इसका, यानि हालात तो दिमाग की उपज है और कुछ नहीं।

सोचो तो दुख वरना मनोरंजन, अन्यथा यह अकेला झाड़, अपने उजले हरियाले चेहरे के साथ यहां इतना क्यों फलता–फूलता? इसकी हरियाली देखकर लगता ही नहीं कि इसको रत्तीभर भी यहां इस सूनी सड़क पर अकेले हो जाने का गम या रंज है। सुबह के सूरज की रोशनी जब गली–कूचों पर अपनी आसमानी महक उड़ेलती है तब यह झाड़ दूर–दूर से आने वाली ताजातरीन आवाजें सुनकर मस्त–मगन रहता है, दूर हलवाई की दुकान में छनती हुई

जलेबी की महक, मंदिर मे बजते ढोल– मजीरे और सुबह ही सुबह बिस्कुट–ब्रेड बेचने वालों की यहां–वहां से आती आवाज।

इस बावले को तो शायद आभास तक नहीं होगा कि इसके पूर्वज कितने गौरवशाली रहे हैं। त्रेता युग में श्रीराम और लक्ष्मण ने शबरी के आश्रम में जाकर बेर ही ग्रहण किये और वो प्रसंग इन बेरों की महिमा के कारण चिरंजीवी हो गया। प्रतापी सम्राट महाराणा प्रताप की अर्धांगिनी, बाल बच्चों आदि सबने महल से दूर घनघोर जंगल में तीन समय यही बेर चुन–चुन कर खाये और अपना आत्मबल बनाये रखा। उसके बाद महाराणा प्रताप ने रणनीति बनाकर मुगलों से लोहा लिया। लोहे से याद आया कि चिकित्सक कहते हैं कि झाड़ी में फलने वाले तीन मुट्ठी बेर में इतना लोहा और शर्करा होती है जो दिन भर सक्रिय रहने को पर्याप्त है।

बेर के इस झाड़ का जीवन दर्शन कुछ अलग है। इसकी सांसें अंतरात्मा से प्रेरित शांत मन में सहज और निश्छल विचारों के साथ रहती हैं। इसको अतीत के किस्से याद करके गाल बजाने का कतई शौक नहीं है।

इसने जरूर कोई परम सुख तो साध ही लिया है कि यह भीतर से भाव विभोर ही लगता है।

भले ही झाड़ में गुलाब वाली वो नजाकत नहीं लेकिन बकरियों के झुंड के झुंड इसके जायकेदार पत्तों की खुशबू से यहां खिंचे चले आते हैं और बड़ी सफाई से अपनी दावत का लुत्फ उठाते हैं। तब इनकी मेजबानी करते हुए बेरी के झाड़ को यही लगता होगा कि कुदरत ने किसी को बेवजह तो नहीं बनाया। जनवरी में जब इसकी डालियां फलों से लद जाती हैं तो इस सूनी सड़क की रौनक और चहल–पहल देखने लायक होती है। दूर दराज से बच्चे आ आकर यहां जुटे रहते हैं और इन खट्टे–मीठे बेरों को कभी रूमाल तो कभी जेबों मे ठूंस ठूंसकर भर ले जाते हुए साफ दिखाई दे जाते हैं। इस शांत संजीदा सड़क पर बस बेरी का यह झाड़ अकेले ही किसी मेले मे तब्दील हो जाता है। मगर इन सबसे यह इतराता और इठलाता तो कभी नहीं दिखता, शायद किसी गौरैया या बारिश की किसी बूंद ने इसके कानों में यह फलसफा कह दिया होगा कि, जीवन की स्वाभाविकता बनी रहे, यही असली ऊर्जा है। और यह झाड़ है भी कमाल का। हमेशा ही जन कल्याण के लिए तत्पर है। कहते हैं कि सोच का दायरा विस्तृत होना चाहिए दिल से जिस चीज के बारे में सोचो, वह मिल जाती है, यह भी कभी किसी सजावट, श्रृंगार और सौंदर्य की कल्पना कर रहा होता होगा कि अचानक कुछ स्त्रियों का समूह भी बतियाता हुआ चला आता है, इसके पास और ''इसकी पत्तियों का रस बालों मे लगाना है'' कहकर अपनी चूड़ियां खनकाती कलाई से कभी यहां उचक कर कभी संभलकर पत्तियाँ तोड़ता दिख जाता है। कितनी बार तो उनका पल्लू या दुपट्टा बेरी से मिलने को बेकरार हुआ जाता है लेकिन वो चौकन्नी गृह लक्ष्मी दूसरे ही पल संभल जाती हैं और बेरी के कांटे हटा लेती हैं। पत्ते में स्वाद है कहकर एकाध नई नवेली दो चार पत्ते हथेली से हौले–हौले मसलकर मुंह में रखती है और जिह्वा से रसपान कर लेती है। ऐसे कितने ही सजीले स्पर्श से बेरी का यह झाड़ आनंदित होता हुआ परिलक्षित होता है। शनैः शनैः, इसके व्यवहार को रोज गहराई से देखते हुए इसके मन की स्वरलिपि मुखर होकर गुंजित हो जाती है। यह जिस दिन को जी रहा होता है उसको सर्वोत्तम दिन समझकर भरपूर जी लेता है। लगता है कि, इसकी राय में संतोष का सबसे बड़ा स्रोत ज्यादा से ज्यादा प्राणियों से अनायास और सहज प्रेम भाव है। ◆

छत से सामने की एक सड़क बिलकुल साफ दिखाई देती है, इस गली के कई मकानों के पीठ पीछे से अधिकतर एक खामोशी सी ओढ़े हुए, यह सड़क चिल्लपों करते वाहनों के शोर से परे, कई बार किसी साफ सुथरी, कल–कल बहती नदी सी लगने लगती है। अब यह उस सूनी सड़क की खुशनसीबी ही थी कि इसके किनारे पर एक बेर का झाड़ पनपा और हाथ पैर फैलाकर वयस्क हो गया, अब वो भी छत से ही साफ दर्शन देता है, जैसे कोई तपस्वी बैठा हो साधना में, कहीं से कोई दखलअंदाजी न होती देखकर यह झाड़ फैलता चला जा रहा है।

पता : पुष्कर रोड, कोटरा, अजमेर–305001

विरासत

❑ रतन खंगारोत

अतुल मल्होत्रा आज उसी कुर्सी पर बैठा था। जिस पर बैठने का सपना उसके पापा ने उसके लिए देखा था। अतुल मल्होत्रा अपने लिए नहीं, बल्कि अपने पापा के लिए जीने वाला एक होनहार बेटा है। वह जानता है कि यह आई.ए.एस. की पोस्ट ही एकमात्र वो तोहफा है, जो उसके पापा ने उससे मांगा था। वरना बचपन से ही उसका हर सपना पूरा करने वाले पापा ने कभी उससे कुछ भी नहीं कहा था।

अतुल मल्होत्रा जाने–माने बिजनेसमैन

माधव मल्होत्रा का बेटा है। अक्सर बिजनेसमैन के बच्चे भी बड़े होकर अपने पुश्तैनी व्यवसाय को आगे बढ़ाते हैं। अतुल व नीता (अतुल की छोटी बहन) भी अपने पापा के बिजनेस को आगे बढ़ाने में रुचि रखते थे। परंतु माधव मल्होत्रा ने अतुल की जगह नीता को बिजनेस में स्थान देना उचित समझा और अतुल को सिविल सर्विसेज की तैयारी करने को कहा। वैसे माधव मल्होत्रा चाहते तो अपने बेटे को किसी भी परीक्षा में बिना मेहनत के सफलता दिला सकते थे। परंतु अपने उसूलों के पक्के और ईमानदार व्यक्तित्व के धनी मल्होत्रा किसी भी शार्टकट रास्ते को अपने बच्चों के जीवन का आधार नहीं बनाना चाहते थे।

आज बेंगलुरु की प्रसिद्ध फाइव स्टार होटल ''होटल सनराइज'' में एक भव्य पार्टी हो रही थी। जो माधव मल्होत्रा ने अपने बेटे की सफलता पर रखी थी। बेंगलुरु के साथ–साथ देश के अन्य हिस्सों से भी कई बड़े–बड़े बिजनेसमैन व नेता तथा अफसर इस पार्टी में आए थे।

पार्टी शुरू होते ही माधव मल्होत्रा अपनी मां, दमयंती मल्होत्रा व पत्नी अंजना मल्होत्रा तथा बेटी नीता के साथ आए। धीरे–धीरे सारे मेहमान आ गए थे। कुछ समय बाद पार्टी के आइकॉन अतुल का आगमन हुआ।

अतुल 6 फीट 2 इंच के खूबसूरत नौजवान, अतुल ने आते ही पार्टी में चार चांद लगा दिए थे। ग्रीन कोट–पैंट, महंगे शूज, महंगी घड़ी और आंखों पर चश्मा, गेहूंआ रंग और एक रौबदार चाल, हर किसी की नजर अतुल पर ही थी।

पहले कॉलेज और फिर आई.ए.एस. की तैयारी और ट्रेनिंग इन सब में अतुल कभी ऐसी पार्टियों का हिस्सा बन ही नहीं पाया था। पार्टी में हर व्यक्ति अतुल के साथ–साथ माधव मल्होत्रा

वह उनके पूरे परिवार को बधाई दे रहा था। तभी माधव मल्होत्रा ने अपने हाथ में माइक लिया व सबको ''अटेंशन जेंटलमैन''–संबोधित किया।

माधव मल्होत्रा–''आप सभी मेरे परिवार की खुशियों के हिस्सेदार बने, इसके लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद। मेरे बेटे की सफलता के साथ–साथ ही मैं आपको एक और खुशी की बात बताना चाहता हूं।''

सबकी नजरें माधव मल्होत्रा पर ही थी। उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ते हुए कहा कि ''आप सभी जानते हैं कि हमारे मल्होत्रा होटल एंड ग्रुप्स ने पूरे भारत में अपनी ब्रांच खोल रखी है। और इस शृंखला को मजबूत करने के लिए मुझे यंग सोच की जरूरत है। इसलिए मैं अपनी बेटी नीता मल्होत्रा को अपनी कंपनी का सीईओ बनाना चाहता हूं। और मैं नीता को कहना चाहता हूँ कि, वह कल से ही अपनी जिम्मेदारी संभालना शुरू करें।

पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। अपने परिवार के साथ–साथ अतुल भी बहुत खुश था। वह अपनी बहन के पास गया और उसे गले लगा कर बधाई दी। सभी लोग खाना खाने में व्यस्त थे। अतुल भी अपने दोस्तों के साथ अपनी खुशियां शेयर कर रहा था।

तभी उसके कानों में किसी की आवाज आई! क्यों लग गया ना झटका?

अतुल ने पीछे मुड़कर देखा तो ''सिंघानिया होटल एंड ग्रुप'' के मालिक अजय सिंघानिया थे। अतुल ने पूछा– क्या मतलब?

आप कहना क्या चाहते हैं? अजय सिंघानिया ने अपनी कुटिल मुस्कान के साथ कहा– ''वही जो तुम सुनना पसंद नहीं करोगे'' मैं क्या सुनना पसंद नहीं करूंगा?

मुझे साफ–साफ बताइए–अतुल ने कहा और सिंघानिया की तरफ कदम बढ़ाने लगा तो उसके दोस्तों ने उसे रोका।

पर अजय सिंघानिया की कुटिल मुस्कान उसे, उसकी पूरी बात सुनने के लिए उकसा रही थी। अतुल ने जब दोबारा वही बात दोहराई, तो अजय सिंघानिया ने कहा कि–''मैं क्या बोलूं! तुम ही देख लो। अपना खून आखिर अपना ही होता है। दूसरों के सपनों से किसी को कोई मतलब नहीं होता है।''

अब सिंघानिया की बातें अतुल के दिमाग पर असर करने लगी थी। वैसे अतुल कोई कानों का कच्चा नहीं था। वह एक बहुत ही समझदार लड़का है, जिसके लिए उसका परिवार, उसके असूल और उसका देश, इसके आगे कुछ भी नहीं। जब सिंघानिया को लगा कि, उसका तीर निशाने पर लगा है। तब उसने दूसरा प्रहार किया।

अजय सिंघानिया– ''यही कि माधव मल्होत्रा ने अपनी बेटी नीता को कंपनी का सीईओ बनाया'' और अपने बड़े भाई के बेटे, यानी तुम्हें ''आई.ए.एस.'' जबकि बिजनेस में तो तुम्हारी भी रुचि थी। अतुल जोर से चीखा– ''यह क्या बकवास कर रहे हो?'' मैं तुम्हारी जहरीली बातों में नहीं आने वाला। मैं जानता हूं कि ,तुम मेरे पापा को बिजनेस में नहीं हरा सकते इसलिए यह घिनौना खेल खेल रहे हो।

अजय सिंघानिया ने अतुल के हाथ में एक लिफाफा दिया और किसी के आने से पहले ही वहां से खिसक गया। अतुल के तेज आवाज में चिल्लाने से उसके दोस्त उसके पास आ गए थे। वैसे वहां पर म्यूजिक भी चल रहा था तो अतुल के परिवार में से किसी का ध्यान नहीं गया था। अतुल ने वह लिफाफा नीचे फेंक दिया पर उसके दोस्त जॉय ने उसे उठाकर खोल दिया। लिफाफे में मौजूद फोटो व एक रिपोर्ट को देखकर उसकी आंखें खुले की खुली रह गई थी। उसको इस तरह परेशान देखकर अतुल ने उसके हाथ से फोटो व रिपोर्ट दोनों ले लिए।अतुल ने देखा कि– वह उसका बर्थ सर्टिफिकेट था और फोटो में उसके बड़े पापा व ममा की गोद में अतुल के बचपन की फोटो थी। वह जानता था कि उसके बड़े पापा, जयंत मल्होत्रा में उसके पापा की जान बसती थी। परंतु बर्थ सर्टिफिकेट में उसके पापा–मम्मी के नाम के स्थान पर उसके बड़े पापा जयंत मल्होत्रा व बडी ममा, सीमा मल्होत्रा नाम लिखे थे।

जब उसने कागज को उलट कर देखा तो उसके पीछे लिखा था– ''यह सारा बिजनस तुम्हारे पापा जयंत मल्होत्रा का था। परंतु तुम्हारे चाचा ने उन दोनों की हत्या कर इस बिजनेस को हड़प लिया। और आज अपनी बेटी को सौंप दिया।'' अतुल की आंखों के आगे अंधेरा छा गया। उसे समझ नहीं आ रहा था वह किस पर विश्वास करें। इन सबूतो पर या अपने परिवार पर।

माधव मल्होत्रा की नजरे अपने बेटे पर गई तो वह उन्हें कुछ परेशान लगा। वह अपने मेहमानों को संभाल रहे थे। इसलिए अपनी पत्नी को भेजा कि तुम देखो जरा, ''अतुल मुझे कुछ परेशान लग रहा है।''

अंजना जब अतुल के पास गई तो अतुल अपनी मां का हाथ पकड़ कर उस हाल के बाहर आ गया। इसी बीच अतुल की दादी भी उनके पीछे–पीछे आ गई।

अतुल को परेशान देखकर अंजना जी बहुत परेशान हो रही थी। और वह बार–बार अतुल से पूछ रही थी कि– ''तुझे यह अचानक क्या हो गया है बेटा? मेरे राजा को इतना परेशान ने कभी नहीं देखा। अगर कोई बात है तो मुझे बताओ। अतुल ने अंजना जी का हाथ पकड़ा और अपने सिर पर रखा और फिर वह फोटो व बर्थ सर्टिफिकेट उनके हाथ में रख दिए। अतुल अच्छे से जानता था कि अंजना जी उससे कभी झूठ नहीं बोल सकती है। अंजना मल्होत्रा ने सारे सबूत देखकर कहा कि– ''वही सच है जो तुम सोच रहे हो।''

इतना बोलकर वह वही निढाल होकर गिर पड़ीं। जब तक दमयंती उन दोनों के पास आई, तब तक अतुल हवा की गति से वहां से चला गया। अरे! क्या हुआ बहू?

यह अतुल इतने गुस्से में कहां गया है? मैंने आज तक उसे इतने गुस्से में कभी नहीं देखा। अंजना मल्होत्रा ने दमयंती जी के सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। और उस सर्टिफिकेट को पीछे की तरफ से पढ़ना शुरू किया। दो लाइन में ही सारा तूफान पढ़कर, वह वहीं दमयंती जी के पैरों में गिरकर रोने लगी और बोली– ''मांजी सब खत्म हो गया। मेरे घर को किसी की नजर लग गई। और उन्हें वह फोटो व कागज सौंप दिया। दमयंती जी को इतना बड़ा झटका लगा कि वह नीचे गिरने वाली ही थी कि वहां पर माधव मल्होत्रा व अतुल के कुछ दोस्त आ गए थे। माधव मल्होत्रा ने अपनी मां को संभाला व अंजना को खड़ा किया। अंजना ने माधव जी को सारी बात बताई तो अतुल के दोस्त जॉय ने इस षड्यंत्र के सूत्रधार का नाम बताया।''

माधव मल्होत्रा को अजय सिंघानिया पर बहुत क्रोध आ रहा था। परंतु पहले वह अपने बेटे से बात करना चाहते थे। अतुल के दोस्त उसे बार–बार फोन लगा रहे थे। परन्तु उसका फोन स्विच ऑफ ही आ रहा था।

रात के 10 बज चुके थे। और अब तक सारे मेहमान भी जा चुके थे। नीता हर घटना से अनजान थी। सभी मेहमानों के जाने तक मल्होत्रा फैमिली खुश होने का दिखावा कर रही थी। सभी के जाने के बाद माधव मल्होत्रा ने अपने सारे गुप्त एजेंट्स को अतुल की खोज में लगा दिया था। परंतु होटल के बाहर के कैमरा बता रहे थे कि वह अपनी गाड़ी में न जाकर एक ऑटो में गया था।

उस ऑटो के नंबर के आधार पर उसके मालिक को खोजा गया। पर वह कुछ भी नहीं बता पाया। सिवा इसके कि– उसने C–रोड, चाणक्य नगर में इस व्यक्ति को उतारा था। ये भी इसलिए याद रहा, क्योंकि उस व्यक्ति ने उसे 50 की जगह ₹500 दिए थे। आखिरकार 2 दिनों की कड़ी मेहनत के बाद अतुल का पता चला।

उसे घर लाया गया, तो वह बहुत ही गुस्से में था। जब माधव मल्होत्रा उसके गले लगना चाहा तो उसने उन्हें दूर झटक दिया और कहा कि– ''मैं अपने मम्मी–पापा के हत्यारों के साथ नहीं रह सकता।'' दमयंती जी ने यह सब सुना तो उनके पांव तले जमीन ही खिसक गई।

जब अतुल बार–बार अपनी बातों को दोहराने लगा तो दमयंती जी ने एक जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर मारा और लगभग चीखते हुए बोले कि– ''जिसने अपना पूरा जीवन इस विरासत को बचाने में लगा दिया हो, वह किसी को क्या मारेगा?''

जब नीता ने अपने भाई को परेशान देखा तो उसके पास आकर बोली कि– ''भैया आप यह सब क्या बोल रहे हो?''

तब अतुल ने उसे भी दूर करते हुए कहा कि– ''तुम्हारे मम्मी–पापा तुम्हारे पास है। इसलिए तुम मेरे दर्द को क्या समझोगी? माधव मल्होत्रा व अंजना दोनों किसी गुनहगार की भांति सर झुकाए खड़े थे। दोनों की आंखों से आंसुओं का सैलाब उमड़ रहा था। दमयंती जी से जब यह सब देखा नहीं गया तब उन्होंने हर राज से पर्दा उठाना ही सही समझा।

माधव जी ने उन्हें रोकने की कोशिश की तो वह बोली

कि– ''नहीं माधव! तुमने इस मल्होत्रा खानदान की विरासत को बचाने के लिए अपना संपूर्ण जीवन लगा दिया। पर आज तुझे अपना ही खून कटघरे में खड़ा कर रहा है। यह सब मुझसे नहीं देखा जाता। अब तुझे सारा सच इन दोनों को बताना ही पड़ेगा।'' अतुल और नीता दोनों अपनी दादी के चेहरे की तरफ देखने लगे।

दमयंती जी ने कहना शुरू किया कि– ''तुम इतनी जल्दी किसी के बहकावे में आकर अपने पिता पर सवाल खड़ा करोगे, यह मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था अतुल। हां, तुम माधव के बेटे नहीं हो। तुम क्या? यह नीता भी इसकी बेटी नहीं है। पर तुम दोनों इसके त्याग को क्या समझोगे?''

''अब चौंकने की बारी नीता की थी।'' ''जब नीता 5 दिन की थी और तुम्हारे पापा–मम्मी अस्पताल से घर आ रहे थे। तब एक सड़क दुर्घटना में उन दोनों की मृत्यु हो गई थी। नीता उसी गाड़ी की पीछे की सीट पर अंजना की गोद में थी। जैसे ही गाड़ी ट्रक से भिड़ी, अंजना में जाने कहां से इतनी फुर्ती आई कि उसने नीता को गोद में लिया और गाड़ी का फाटक खोलकर बाहर निकल गई। अंजना को काफी चोट आई थी। पर उसने नीता को कुछ भी नहीं होने दिया। उस समय तुम्हारी उम्र 4 वर्ष की थी अतुल। पूरा परिवार इस गहरे सदमे में था। तुम्हारे दादाजी यह सब बर्दाश्त नहीं कर पाए और हार्ट अटैक से हमें छोड़कर चले गए थे। उस समय माधव और अंजना के विवाह को एक वर्ष ही हुआ था। इन्होंने अपने जीवन को सही से समझा भी नहीं था, कि पिता, भाई व भाभी की मौत का दुख उनके जीवन में आ गया था। एक तरफ बिजनेस और दूसरी तरफ दो मासूम बच्चे।''

''एक दिन माधव और अंजना मेरे पास आए और जीवन में कभी भी अपनी संतान न करने का फैसला लिया।'' इन दोनों का मानना था कि ''अगर इनको संतान हो गई तो, तुम दोनों के साथ अन्याय होगा।'' और मुझसे यह वादा लिया कि, तुम दोनों को कभी नहीं बताना कि ''तुम उनकी संतान नहीं हो'' दमयंती जी बोलते जा रही थी। और अतुल व नीता उनकी बातों को सुन रहे थे और उनकी आंखों से निरंतर आंसू बह रहे थे। अपनी दादी जी के मुंह से सारी सच्चाई जानकर दोनों माधव मल्होत्रा व अंजना जी के पैरों में गिर पड़े।

अतुल उनसे बार–बार माफी मांग रहा था। माधव और अंजना जी ने अपने बच्चों को गले लगा लिया। परंतु दमयंती जी ने अतुल को पकड़कर एक थप्पड़ और मारा व कहा कि–''तुमने आज उस इंसान का दिल दुखाया है, जो तुम्हारे जीवन में भगवान से कम नहीं है।''

''अरे! इतना प्यार तो तुम्हारे सगे माता–पिता भी नहीं करते, जितना मेरे माधव ने तुम दोनों से किया। और तुम्हारे लिए अपनी संतान नहीं होने दी।''

''क्या इतना बड़ा त्याग कोई और कर सकता है?''

''मैंने अपने 80 वर्ष के जीवन में नहीं सुना और देखा। तुमने देखा हो तो बताओ।''

अरे! मेरे माधव व अंजना के अलावा तुझे दूसरा नाम नहीं मिलेगा और रही बात तुझे आई ए एस बनाने की तो यह मेरे जयंत का सपना था। माधव ने आज अपने भाई का सपना पूरा किया है। लगातार बोलने से दमयंती जी की सांस फूलने लग गई। अतुल अपनी दादी के पैरों में गिर गया और बोला कि– ''मुझे माफ कर दो दादी, मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई, जो मैं अपने ही पिता पर शक कर बैठा।''

अतुल के मुंह से पिता शब्द सुनकर माधव जी उसकी तरफ देखने लगे तो अतुल उनके पास आ गले लगा और बोला कि– ''हां आप ही तो है मेरे पापा।'' जिसके जीवन में उनके परिवार और संस्कारों से बड़ा कुछ नहीं, ऐसे इंसान का बेटा बनकर मैं अपने आप को धन्य महसूस कर रहा हूं।

पापा, दादी और ममा, मै और नीता आपसे वादा करते हैं कि– ''यह आपका त्याग और संस्कार एक विरासत के रूप में हम संजो कर रखेंगे।''

दमयंती जी ने देखा कि कुछ काले बादल जो उनके घर के चारों तरफ दिख रहे थे, वे अब धीरे–धीरे हटने लगे हैं, और एक रोशनी से भरा खुशनुमा मौसम नजर आ रहा है। ◆

पता : 15 ए जीन माता नगर, शेखावट मार्ग, जयपुर–302012, राजस्थान

आत्मनिर्भरता

❑ डॉ. प्रियंका पाठक

श्यामली केवल पांच वर्ष की थी, तभी एक कार दुर्घटना में उसके माता–पिता और बड़े भाई की मौत हो गई थी। इस दुर्घटना में वह और उसके चाचा बच गए। उन्हें मामूली चोट आई थी। उसके चाचा की नियुक्ति दिल्ली विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर हुई थी। उनको ज्वाइन कराने नोएडा से दिल्ली वह लोग गए थे कि लौटने के क्रम में यह दुःखद घटना घट गई। जब यह खबर उसकी दादी को पता चली तो उनकी भी तबीयत खराब हो गई और कुछ दिनों के पश्चात उनका स्वर्गवास हो गया। अब घर में श्यामली उसके चाचा पंकज और नई नवेली चाची पारुल थे। अभी बीस दिन पहले ही पंकज का अपनी बचपन की दोस्त पारुल से विवाह हुआ था। पंकज के बड़े भाई प्रमोद ने उनकी शादी बड़े ही धूमधाम से की थी। भाई, भाभी, भतीजा और अब मां की मृत्यु ने पंकज को झकझोर कर रख दिया था। एकाएक घटित इन घटनाओं ने उन्हें ज्यादा ही संजीदा और परिपक्व व्यक्ति बना दिया था। वह कहीं ज्यादा गंभीर, समझदार और अपने कर्तव्य के प्रति सजग हो गए थे।

पारुल कहने को चाची थी। लेकिन मां सरीखी दुलार देने वाली चाची ने अपनी स्नेहिल वर्षा की फुहार से नन्हीं श्यामली के तन–मन को सराबोर कर दिया था।

एकाएक मनुष्य का जीवन कैसे करवट बदलता है, कभी–कभी आभास तक नहीं होता। लेकिन जब जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जाता है, तब सब कुछ विश्वसनीय सा लगने लगता है। चाची–चाचा को छोड़कर अभी कुछ साल पहले आई श्यामली अपने सरकारी क्वार्टर की बालकनी में खड़ी है। अपनी बेटियों के ताइक्वांडो क्लास से आने की प्रतीक्षा करते–करते अतीत में फिर से खोने लगी थी। समाजशास्त्र से उसने दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए., एम. फिल किया फिर नेट भी क्वालीफाई कर लिया और अपने बैचमेट राकेश और रंजीता के कहने पर उनके साथ पी.एच.डी भी कर रही थी।

उसके चाचा पंकज ने उसकी शादी अपने प्रिय छात्र डॉ. गौरव से तय कर दी, जिसने आई.पी.एस. कंप्लीट करने के बाद ए.एस.पी. के पद पर ज्वाइन किया था। पी.एच.डी कर लेने के बाद श्यामली की शादी गौरव से हो गई।

गौरव की मनोहर छवि आंखों में बिजली सी कौंधती उसके ह्रदय रूपी बादल को चीर गई यादों की कसक से आंखें छलछला आई। अश्रुपूरित नेत्रों से उसने अपने आसपास नजर दौड़ाई, वहां किसी को न पाकर उसने संतोष की सांस ली और अपने आंचल के छोर से आंख के आंसूओं को पोंछ डाला।

वह अपने अतीत में डूबने लगी। गौरव आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे। आत्मविश्वास और निडरता उनमें कूट–कूट कर भरी थी। मृदुभाषी इतने थे कि जो एक बार मिल लेता प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

गौरव को जीवनसाथी के रूप में पाकर उसके सारे सपने साकार होने लगे थे। शादी के दूसरे वर्ष ही भगवान ने जुड़वा बेटियों को उसके गोद में डालकर मातृत्व की गरिमा से उसे अलंकृत कर दिया था। दोनों बेटियों के आ जाने से उसके जीवन की बगिया खुशी के फूलों से महक उठी थी।

सचमुच वह स्वयं को सबसे अधिक भाग्यशाली समझ बैठी थी। माता–पिता और इकलौते भाई को खोने के पश्चात भी माता–पिता तुल्य चाचा–चाची के वात्सल्य और स्नेह की छांव ने कभी भी उसे अनाथ होने की तपिश का एहसास नहीं होने दिया था।

वह इस कदर उन पर निर्भर हो गई थी कि सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास उसमें बिल्कुल नहीं हो पाया था। चाचा–चाची की खुशियां ही उसकी खुशी बन कर रह गई थी। अपने अस्तित्व को कभी उन दोनों से अलग कर वह सोच नहीं पाई थी। चार साल पहले की बात है आगरा में अपराधियों से मुठभेड़ में गौरव बुरी तरह घायल हो गए। शरीर से बहुत रक्त बहने के कारण उनकी स्थिति दयनीय बनी हुई थी। तुरंत खबर मिलते ही चाचा–चाची भागे– भागे आगरा आ गए थे। डॉक्टरों के अथक प्रयास से भी गौरव की हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा था। क्योंकि वह कोमा में चले गए थे। वह बेचारी अपलक नयनों से गौरव को ताकती रहती। दस दिन की बेहोशी में ही वह सदा के लिए सब को बिलखता छोड़ गए थे।

स्वयं श्यामली तो कमजोर बेल थी ही पहले चाचा–चाची के तने से लिपटी थी, बाद में मजबूत इरादों वाले गौरव जैसे सघन मजबूत पेड़ को पाकर उसके इर्द–गिर्द वह लिपटती बढ़ती, ऊपर चढ़ती चली जा रही थी कि अचानक आंधी की एक तेज झोंके से वह पेड़ जड़ से उखड़ कर जमीन पर औंधे मुंह गिरा था। फिर वह कमजोर "बेल" जो उस पेड़ के चारों ओर से लिपटी थी, पेड़ के धराशायी होते ही टूट–टूट कर कई टुकड़ों में बिखर कर रह गई थी।

उस समय भी चाचा–चाची के असीम प्यार ने हीं उसे समेटा था। नव्या और न्यासा के साथ उसे आगरा से दिल्ली अपने साथ ले आए थे। आगरा के पुलिस लाइन के सभी पुलिसकर्मियों सहित, डीजीपी शशांक शेखर मिश्रा और एस .पी. रमाकांत ठाकुर ने भी श्यामली को बहुत समझाया कि बच्चियों की उज्जवल भविष्य के लिए तुम्हें नौकरी कर लेनी चाहिए। कॉलेज में तुम्हारी नौकरी की बात हमलोग करते हैं। प्रवक्ता के पद पर तुम्हारी नियुक्ति हो जाएगी। लेकिन श्यामली से पहले उसके चाचा –चाची ने इस नौकरी के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था।

श्यामली भी गहरे सदमे में थी। साहस और आत्मविश्वास की कमी उसके जीवन में थी।

काश! उसने डीजीपी मिश्रा और एस. पी. रमाकांत ठाकुर के कहने पर धैर्य, संयम, साहस और समझ से काम लिया होता।

रमाकांत ठाकुर ने कहा था कि "विषम परिस्थितियों में दुःखों से विचलित होकर, दुःखी व्यक्ति को सांत्वना देने और ढांढस बँधाते हुए अपने सगे, परिचित, दोस्त जाने कितनी बातें कह जाते हैं, कितने वादे करते हैं, लेकिन श्यामली सच मानो यह सारी बातें बकवास साबित होती है, कोरी सांत्वना सिद्ध होती है। जीवन के लंबे सफर में कोई किसी का साथ नहीं देता।

यह तो तुम भी जानती हो, न कि दुनिया से जाने वाले लौट कर नहीं आते और जो जीवित रह जाते हैं उन्हें अपने दायित्वों को निभाना पड़ता है। श्यामली बेटा सहानुभूति और दया के सहारे पूरा जीवन नहीं काटा जा सकता, फिर तुम्हारे कंधों पर अबोध नन्ही बच्चियों की जिम्मेदारी है। अब तुम्ही उनके मां–बाप दोनों हो, इसलिए जो भी कदम उठाना सोच समझकर उठाना। जब भी हमारी कोई मदद की जरूरत हो

तो एक कॉल कर देना। मैं हाजिर हो जाऊंगा। मैं तो कहूंगा कि तुम्हें कुछ महीनों में फिर से नौकरी के बारे में सोचना चाहिए क्योंकि जब बच्चे स्कूल जाएंगे तो तुम घर में बैठे–बैठे उब जाओगी।

निःसंतान चाचा–चाची ने नव्या और न्यासा पर अपना प्यार–दुलार जी खोलकर लुटाया था। अचानक एक दिन रमाकांत ठाकुर के फोन आने पर एक बार डरते हुए श्यामली ने कॉलेज में नौकरी की इच्छा जताई भी थी लेकिन चाचा ने आंखों में आंसू भर कर रूंधे गले से कहा था "श्यामली बेटा नौकरी की बात करके तुमने हमें पल भर में पराया कर दिया, तुम्हारे सिवा हमारा है कौन? यह बंगला, गाड़ी, नौकर–चाकर, खेत–खलिहान सभी तुम्हारे और बच्चियों के ही तो हैं और मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं कि न्यासा और नव्या की परवरिश में कोई भी कमी नहीं करूंगा। उन्हें और तुम्हें खिला कर खाऊंगा,पहनाकर पहनूंगा अपने चाचा–चाची पर भरोसा है न तुम्हें। उनकी बातें सुनते ही सिसकती हुई वह चाचा के सीने से लग गई थी। उसके बाद वह अपने बच्चियों की भविष्य की ओर से बिल्कुल निश्चिंत हो गई थी लेकिन कुछ महीनों पश्चात बेटियों के स्कूल जाते ही उसका मन घर में नहीं लगता। उस समय टीवी के धारावाहिक या अपनी पसंद के गाने भी सुनने का उसका मन नहीं करता। चाची अपनी सहेलियों के यहां साथ जाने को कहती तो वह नम्रतापूर्वक मना कर देती। दोपहर का समय उसे पहाड़ सा प्रतीत होता जो काटे नहीं कटता था। तभी अचानक उसे पता चला कि उसकी प्यारी दोस्त रंजीता के पति का तबादला दिल्ली में ही हो गया है और वह भी दिल्ली के ही एक इंटर कॉलेज में प्रिंसिपल बन कर आ गई है। उसके भी प्यारे–प्यारे दो बेटे हैं। छुट्टी के दिन कभी रंजीता उसके घर आ जाती तो कभी श्यामली ही उसके घर घंटे दो घंटे के लिए चली जाया करती लेकिन गौरव से बिछड़ने की कसक और मन का असंतोष उसे चैन से कहीं रहने नहीं देता था। धीरे–धीरे वह मानसिक अवसाद से घिरने लगी। रंजीता उसे जब भी मिलती, उसे सदा नौकरी करने के लिए प्रेरित करती रहती थी। "माना तुम्हें पैसों की कमी नहीं है लेकिन अपनी विचलित मन की शांति के लिए चार–पांच घंटे दूसरे वातावरण में खुद को व्यस्त रखोगी तो तनाव से बची रहोगी और मन भी बहला रहेगा। आत्मनिर्भरता तुम में नया उत्साह भर देगा, तुम्हारा आत्मविश्वास दृढ़ होगा। अब तो तुम्हें दूसरी शादी के बारे में भी सोचना होगा, अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? इतना लंबा जीवन अकेले कैसे काटोगी? साथी की जरूरत बुढ़ापे में ही पड़ती है। तुम्हें याद है हमारा बैचमेट राकेश शुक्ला वह भी यही किरोड़ीमल कॉलेज में प्रवक्ता बन गया है। तुम्हारे बारे में सुनकर बहुत दुखी हुआ। उस बेचारे की भी पत्नी की डिलीवरी होते समय मौत हो गई। अभी दो महीने का मासूम बेटा है। मैं तो सोच रही थी कि तुम्हें और राकेश को एक साथ मिलकर एक नई शुरुआत करनी चाहिए। कल ही मैं आकर चाचा–चाची से बात करूंगी। श्यामली ने कहा– "नहीं रंजीता मैं दूसरी शादी के बारे में नहीं सोच सकती, अभी मैं अपनी नौकरी के बारे में सोच रही हूं। तो ठीक है कालिंदी कॉलेज में ही गेस्ट फैकल्टी की वैकेंसी निकली है तुम अप्लाई कर दो वहां, कुछ मेरे दोस्त हैं जिनसे मैं तुम्हारे बारे में बात करती हूं।

उसे याद है कि उस दिन वह खुशी–खुशी हाथ में अपॉइंटमेंट लेटर लिए घर लौटी थी। रंजीता की सहायता से ही यह सब संभव हो पाया था। उस दिन , अकस्मात यह सूचना देकर वह चाचा–चाची को सरप्राइज देना चाहती थी। श्यामली के हाथ कॉलबेल पर जाते–जाते अनायास ही रुक गए थे। अंदर से आते शोर को सुन उसने अंदाजा लगाया कि शायद किटी पार्टी चल रही होगी। किटी पार्टी में चाची की सहेलियों के समवेत स्वर गूंज रहे थे जिसमें श्यामली का जिक्र भी हो रहा था। अतः उसने रुक जाना ही बेहतर समझा था। मिसेज शुक्ला के स्वर में पारुल चाची के लिए सहानुभूति थी। "सचमुच मिसेज मिश्रा के तो भाग्य ही खोटे हैं। अपनी संतान तो हुई नहीं, इकलौती दोहथी पर मां की तरह वात्सल्य लुटाया, उसे ब्याहा अब उसके दोनों बच्चों की देखभाल "आया' की तरह कर रही हैं तब तक मिसेज द्विवेदी ने मिसेज शुक्ला की बातों का समर्थन करते हुए कहा– 'अब इन्हें क्लब और किटी–पार्टी कहां याद रहेगी? फुर्सत हो तब तो किसी के यहां आना–जाना हो। पारुल चाची तब रूआंसी आवाज में बोली थी– "अपना–

अपना भाग्य है, अपने हिस्से का दुःख हर किसी को भुगतना पड़ता है। श्यामली के विवाह से मुक्ति मिली थी तो सोचा था कि अपने तरीके से जीवन यापन करूंगी। आप लोगों के साथ सुख–दुख बाटूंगी लेकिन अब दो मासूम बच्चियों का दायित्व भी मेरे कंधों पर आ गया है। श्यामली तो यहां आकर अपनी बच्चियों की ओर से निश्चिंत हो गई है। इनके सुखों की खातिर तो मैं अपने सारे सुखों का बलिदान दे रही हूं। पता नहीं बड़े होकर....''

आगे अब कुछ भी सुनना उसके बस में नहीं था वह लान के पिछले दरवाजे से अपने कमरे में आकर कटे वृक्ष की भांति बिस्तर पर औंधे गिर पड़ी थी, वह जी भर कर रोई थी "उस दिन। चाचा–चाची पर अपने मां–बाप से ज्यादा अटूट विश्वास था जो आज दरक कर चूर–चूर हो गया था। जिस सघन वृक्ष के तले अपने दोनों बच्चों सहित स्वयं को वह आजीवन सुरक्षित समझ बैठी थी, वह वृक्ष तो फल–फूल पत्र विहीन साबित हुआ था मोह–मरीचिका से उबर चुकी थी। श्यामली उस दिन यह सोचने पर विवश हो गई थी कि हाथ–पांव से दुरुस्त, पढ़ाई में अव्वल रही। मैं अपने दोनों बच्चों सहित क्यों अपने चाचा–चाची पर बोझ बनी हूं? पारुल चाची ने बिल्कुल सत्य कहा था– "मेरी बच्चियां मेरी ही जिम्मेदारी हैं उनका दायित्व मेरा है मुझे उसका निर्वहन करना चाहिए, वह बेचारी क्यों मेरी और मेरी दोनों बच्चियों के लिए व्यर्थ अपना जीवन होम करें। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिंदगी अपनी तरह से जीने का अधिकार है। अपने हिस्से का दुख मैं स्वयं झेलूंगी। दोनों बच्चों का दायित्व मेरा है उसे मैं निर्वहन करूंगी। उसके लिए जिस आत्मविश्वास और साहस को रंजीता और एसपी ठाकुर के लाख प्रयासों के बाद भी जगा नहीं पाई थी। उसे आज चाची द्वारा कही सच्ची बातों ने पल भर में जागृत कर दिया था। गेट के बाहर टैक्सी रुकने की आवाज सुन पारुल चाची निकल आई थी। रामू काका कोई आया है क्या? उनके स्वर में उत्सुकता थी। नहीं बहु रानी टैक्सी तो श्यामली बेबी ने मंगाई है, रामू काका ने कहा था। टैक्सी पर कुछ आवश्यक सामान के साथ नव्या पहले ही जा बैठी थी। पारुल चाची जब तक कुछ समझ पाती श्यामली न्यासा का हाथ पकड़े सधे कदमों से बरामदे में उनके सम्मुख आ खड़ी हुई थी। आज उसका चेहरा आत्मविश्वास से दमक रहा था। उसकी आवाज में जरा भी कंपन नहीं थी। चाची ने उससे नजरें मिलाते हुए अधिकार सहित आश्चर्य मिश्रित स्वर में पूछा था– "अरे! तुम इस तरह कहां जा रही हो?' श्यामली ने झुककर चाची के चरण स्पर्श किए और अश्रुपूरित नेत्रों से चाची की आंखों में देखते हुए दृढ़ स्वर में बोली चाची प्लीज मुझे जाने से मत रोकिएगा। मैं आत्मनिर्भर बनना चाहती हूं। जीवन भर मैं किसी पर निर्भर होकर नहीं जीना चाहती। चाचा के नाम पत्र लिखकर मैंने रामू काका को दे दिया है। चाचा की उपस्थिति में मैं जा नहीं सकूंगी। मैं तो आपको अपना निर्णय और नौकरी मिलने की खबर पहले ही देने वाली थी लेकिन ड्राइंग रूम में आपकी किटी पार्टी चल रही थी इस कारण मैं आपको बता न सकी। चाची आपको तो खुश होना चाहिए कि मैं आत्मनिर्भर बनने जा रही हूं। अपने दायित्व का बोध मुझे हो गया है। मैं अपने दोनों बच्चियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना चाहती हूं, उनमें साहस और आत्मविश्वास कूट–कूट कर भरना चाहती हूं ताकि जीवन की कठिनाइयों का सामना वे संयम और धैर्य पूर्वक कर सके। मैं अपने लक्ष्य प्राप्ति में आपकी सहायता चाहती हूं बस मुझे आशीर्वाद दीजिए। इस अप्रत्याशित घटना के लिए वह कतई तैयार नहीं थी। उनकी जुबान मानो तालू से चिपक गई हो, उनकी आंखों से अविरल प्रवाह होने लगा था। वह किंकर्तव्यविमूढ़ न्यासा का हाथ थामें श्यामली को जाते हुए देख रही थी। निःसंतान पारुल चाची का अंतस पीड़ा से भर उठा था। बरामदे में पड़ी कुर्सी पर वह धड़ाम से बैठ गई थी। श्यामली ने उधर से मुंह फेर कर गालों पर बिखरे आंसुओं को पोछ डाला था। अचानक स्कूल बस के हार्न और बच्चों के कोलाहल से श्यामली की तंद्रा भंग हुई। वह एक झटके में अतीत से वर्तमान में लौट आई। होठों पर सहज मुस्कान बिखेरती अपने बच्चों को लेने के लिए वह शीघ्रता से सीढ़ियां उतरने लगी। ◆

पता : संजय गांधी नगर रोड नं.–10A,
हनुमान नगर, पटना–800001,
बिहार

तेरा मेरा साथ

❑ रेखा भारती मिश्रा

कमरे के वेंटिलेटर पर एक गौरैया उड़कर आती है और चोंच में लिए तिनके को वहां रखकर धीरे–धीरे एकत्रित करती जाती है। कभी–कभी उसके साथ एक दूसरी गौरैया भी आ जाती उसकी मदद के लिए। उसकी चोंच में भी फूस के तिनके दबे होते। कुछ दिनों के बाद वह एक सुंदर सा घोंसला बना लेती है। उस घोसले में वह अपना डेरा डाल देती है। सुहानी उस प्यारी सी गौरैया को देखकर खुश हो जाती है। सुबह–सुबह उसकी चींचीं की आवाज सुहानी के कानों में मधुर संगीत घोलने का काम करती है। उसे गौरैया के रूप में एक सखी मिल गई थी।

सुहानी शादी होकर आयी तो घर में सास–ससुर को मिलाकर वह चार जन ही थी। दो ननदें थी लेकिन शादीशुदा, अपनी–अपनी गृहस्थी में व्यस्त। त्यौहार में कभी आ जाती तो सुहानी का थोड़ा मन लग जाता। मायके में उसका भरा पूरा परिवार था। पिता और चाचा साथ में रहते। दादा–दादी थे तो संयुक्त घर में उसने कभी अकेलापन जाना ही नहीं।

विजय अपनी दो बहनों का इकलौता भाई है। बहनों की शादी पहले हो गई। विजय पिता के साथ कपड़े की दुकान चलाता था। पति और ससुर देर रात आते थे। ऐसे में सुहानी सास के साथ घर में अकेले रहती। शाम के समय सास कभी–कभी अपनी हमउम्र महिलाओं के साथ पास वाले मंदिर में शाम की आरती के लिए चली जातीं। इस परिस्थिति में सुहानी को अकेलापन खलता। हालांकि गौरैया ने कुछ हद तक उसके एकांत को अपनी मधुर आवाज से कम तो किया था। ''मां प्लीज... आज मंदिर मत जाइए। देखिए न कितना अच्छा मौसम है! मैं गरमा गरम पकौड़े तल लेती हूँ, चाय के साथ हम दोनों इकट्ठे बैठकर खाएंगे,'' सुहानी अपनी सास से कहती है। ''अभी दोपहर का खाना तो ठीक से पचा नहीं। मंदिर के बहाने थोड़ा टहलना भी हो जाता है इसलिए मैं जा रही हूँ। पकौड़े बनाकर तुम खा लो।''

''मां... मैं अकेले घर में बोर हो जाती हूँ। पकौड़े, चाय तो बहाना है आपको साथ रखने के लिए। ''तभी तो कहती हूँ बहू... पोते–पोतियो का मुँह दिखा दो। उन बच्चों में मैं भी रम जाऊँगी और तुम्हें तो मां बनने के बाद मुझ बुढ़िया को चाय पूछने के लिए भी फुर्सत नहीं रहेगी। शादी को साल से ऊपर हो गया। आजकल के बच्चे तो बस... प्लान करके बच्चे लाते हैं। अब उपाय ये, सब बंद कर और एक बच्चे को तो आ जाने दे,'' कहकर सासू मां मंदिर के लिए निकल जाती हैं।

सुहानी को सास की अंतिम बात चुभ जाती है। कैसे बताए कि वह कुछ उपाय नहीं कर रही। क्या जाने वह गर्भवती क्यों नहीं हो रही है! रात के खाने के बाद सभी लोग अपने कमरे में चले जाते हैं। सुहानी भी रसोई का काम निपटाकर कमरे में आती है। विजय बिस्तर पर सोने की तैयारी कर रहा था। ''सुनो... मैं सोच रही हूँ कि एक दिन किसी डॉक्टर को मिल लेती।'' विजय के मन को भांपने की कोशिश करते हुए सुहानी कहती है।

''डॉक्टर के पास! क्या हुआ? तबीयत तो ठीक है न!'' सुहानी का सिर और बदन छूते हुए विजय कहता है। मेरी तबीयत को कुछ नहीं हुआ है। बात बस यह है कि मैं मां बनना चाहती हूँ। सुहानी की बात सुनकर विजय हंस पड़ता है, ''इतनी सी बात के लिए डॉक्टर के पास जाओगी! इसके लिए तो यह नाचीज हाजिर है,'' कहते हुए विजय सलोनी को अपनी तरफ खींच लेता है। ''मजाक छोड़ो। शादी को साल भर से ऊपर हो गया लेकिन....,'' सुहानी मुंह बनाते हुए कहती है।

''अरे अब इतनी भी क्या जल्दी है... आ जाएगा बच्चा। शादी हुई नहीं कि परेशान होने लगी,'' कहकर विजय मुँह घुमा लेता है। सुहानी आगे कुछ बोलना चाहती है लेकिन विजय थके होने की बात बोलकर सो जाता है। सुहानी की दिनचर्या फिर से वही शुरू हो जाती है। एक दिन कमरे में पंखे की सफाई करते हुए उसकी नजर अचानक वेंटिलेटर पर बने चिड़िया के घोसले पर जाती है। उसमें चिड़िया ने छोटे–छोटे बच्चे दिए थे। उनकी चींचीं की आवाज बहुत धीरे–धीरे आ रही थी।

सुहानी को उन बच्चों पर प्यार आने लगता है। वह नजदीक से देखने के लिए अपनी सीढ़ी उधर बढ़ाती है, तभी देखती है कि चिड़िया उन बच्चों के और भी नजदीक आ गयी है। शायद वह बच्चों के लिए सुहानी से भय खा रही थी। सुहानी वहाँ से हट जाती है। चिड़िया के बच्चे को देखकर उसमें मां बनने का भाव पुनः प्रबल हो गया। आखिर इस एकांत को खत्म करने के लिए उसे भी एक नन्हे बच्चे की चाह थी। वह फिर से विजय से बात करती है डॉक्टर से मिलने के लिए।

''देखो... दुकान में अभी बहुत काम है, मेरे पास समय नहीं है. ऐसा करो... तुम मां के साथ या अकेली चली जाओ।'' विजय का जवाब सुनकर सुहानी खिन्न हो जाती है। अब वह अकेले ही डॉक्टर के पास जाने का फैसला करती है। सासू मां या मायके से किसी को साथ ले जाना उसे सही नहीं लगा। आखिर कौन जाने कमी किसमें है, बिना बात के बतंगड़ बन जाता। एक दिन शाम के समय सुहानी डॉक्टर से मिलने चली जाती है। जरूरी जांच के बाद उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं मिली। डॉक्टर ने कहा, ''आप एक बार अपने पति को भी साथ ले आइए, उनकी भी जांच हो जाए तो ही मैं आगे कुछ बता सकूंगी।''

सुहानी डॉक्टर की बात विजय से कहती है। अपनी जांच के लिए विजय तैयार नहीं होता। ''तुम्हारा मतलब क्या है, कमी मुझ में है?''

''मैं ऐसा कब कह रही हूँ। डॉक्टर एक बार जांचकर तसल्ली कर ले, फिर आगे क्या दिक्कत है उसके अनुसार कुछ इलाज हो।'' विजय नहीं मानता है। दोनों के बीच अच्छी अनबन हो जाती है, लेकिन यह बात सुहानी खुद तक ही सीमित रखती है। वह विजय को मनाने की हर संभव कोशिश करती है और एक दिन उसे डॉक्टर के पास चलने के लिए मना लेती है। डॉक्टर का अंदेशा सही था। कमी विजय में ही थी। वह पिता नहीं बन सकता था।

''देखो सुहानी... यह हम दोनों के बीच की बात है। प्लीज इसे किसी से मत कहना।'' ''नहीं कहूंगी... लेकिन तुम ही बोलो क्या चुप रहने से इसका हल निकल जाएगा? क्या हम दोनों माता–पिता बन जाएंगे? आखिर तुम्हारे माता–पिता को क्या कहूं जो पोते–पोती की आस लगाए हैं।'' ''मुझे कुछ नहीं मालूम, अभी मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा।'' उस रात सुहानी और विजय दोनों की आंखों में नींद नहीं थी। एक–दो दिन के बाद विचलित मन जब शांत हो जाता है तो विजय अपनी पत्नी से कहता है, ''आजकल साइंस ने इतनी तरक्की कर ली है कि मां बनना इतना मुश्किल भी नहीं है। चलो डॉक्टर से मिलकर हम दूसरे उपायों पर बात करेंगे।''

''लेकिन विजय...''

''अब लेकिन वेकिन कुछ नहीं। किसी भी परिस्थिति में अगर समस्या है तो उसका समाधान भी होगा।'' सुहानी और विजय डॉक्टर से मिलते हैं। एक बार के लिए डॉक्टर सरोगेसी की सलाह देते हैं लेकिन विजय इसके लिए तैयार नहीं होता है। घर में सबको आखिर क्या बताता। अंत में दूसरी विधि पर विचार करने का तय करते हैं। इधर विजय दुकान को लेकर फिर से थोड़ा व्यस्त हो गया और सुहानी घर में अकेली उस चिड़िया को निहारती रहती। आज फिर सुहानी चिड़िया और उसके बच्चे को निहार रही थी कि तभी दरवाजे पर दस्तक होती है. वह जाकर दरवाजा खोलती है तो एक 30–35 वर्ष के व्यक्ति को सामने पाती है।

''मैं इसी शहर में काम से आया था तो सोचा बुआ से मिलते चलूं।'' ''सॉरी... मैंने आपको पहचाना नहीं। ''मैं रमेश. .. आपकी शादी में आया था। आपकी सास मेरी बुआ है। मैं विजय के मामा का लड़का हूं।'' पारिवारिक परिचय पाकर सुहानी उसे अंदर बिठाती है, ''मां पास के मंदिर गयी हैं संध्या आरती के बाद आ जाएंगी। विजय और पिताजी तो दुकान से रात में ही लौटते हैं। पहले से पता होता तो मैं मां को मंदिर नहीं जाने देती।''

''कोई बात नहीं, मैं आज रात यहीं रुकूंगा। सुबह वाली ट्रेन से घर लौट जाऊंगा,'' रमेश सुहानी से कहता है। ''मैं आपके लिए कुछ नाश्ता लाती हूँ,'' कहकर सुहानी रसोई की तरफ बढ़ जाती है।

इधर रमेश अपने छोटे से बैग में से एक शराब की बोतल निकालता है। हॉल में साइड में रैक पर रखे ग्लास को खुद से उठा लेता है और उसमें शराब डालकर दो घूंट पीता है। तब तक सुहानी रमेश के लिए चाय के साथ बिस्कुट और नमकीन ले आती है। टेबल पर चाय नाश्ता रखते हुए वह शराब देख लेती है और असहज महसूस करती है।''

''हमारे यहाँ यह सब नहीं चलता है। बेहतर होगा कि आप इस बोतल को वापस बैग में रख लें,'' सुहानी रमेश से थोड़ी नाराजगी जाहिर करते हुए बोलती है। ''जी जी...., ''रमेश मुस्कुराते हुए कहता है और बोतल का ढ़क्कन बंद करने लगता है।''

इधर सुहानी अपने कमरे में आकर कुर्सी पर बैठ जाती है और वापस उस चिड़िया को निहारने लगती है। चिड़िया मुड़कर कभी इधर जाती कभी उधर जाती। देखकर लग रहा था मानो वह बच्चों को पंख फैलाना सिखा रही हो। बड़ी चिड़िया की अठखेलियाँ देखकर उसके बच्चे भी चींचीं करने लगते और यह सब देखकर सुहानी मंत्रमुग्ध हो जाती है।

अचानक सुहानी को अपने पास किसी के होने का एहसास होता है। वह पलटकर देखती है तो पीछे रमेश खड़ा था। उसकी मुस्कान में कुटिलता झलक रही थी। सुहानी झटके से कुर्सी से उठकर खड़ी हो जाती है। ''मां आती ही होंगी, आप हॉल में बैठिए।'' ''वह... मुझे पानी चाहिए था।''

''उधर फ्रिज में है, आप ले लीजिए।'' सुहानी रमेश को कमरे से बाहर भेजने के ख़्याल से कहती है लेकिन वह वहीं खड़ा रहता है। सुहानी कमरे से बाहर निकलने लगती है कि अचानक रमेश का कठोर हाथ सुहानी के बाजू को पकड़ लेता है। ''मैं तुम्हारे यौवन का प्यासा हूँ। तुम्हें नहीं पता कि तुम कितनी खूबसूरत हो। काश! तुम मेरी पत्नी होती, लेकिन उस विजय को तुम मिल गयी।''

रमेश की बातों से सुहानी को उसकी मंशा का अंदाजा लग गया। वह अपना बाजू छुड़ाने की कोशिश करने लगी। असफल होने पर वह रमेश के हाथ पर दांत गड़ाती है। वह कमरे से बाहर निकलने की कोशिश करती है लेकिन गुस्से में आग बबूला रमेश अपना पैर लगाकर सुहानी को गिरा देता है और एक भूखे चीते की भांति वह सुहानी पर हावी हो जाता है।

''लाख कोशिश के बाद भी वह रमेश के चंगुल से निकल नहीं पाती और अपनी अस्मत हार जाती है।'' सुहानी को रौंदकर रमेश विजयी मुद्रा में वहां से चला जाता है। देर शाम जब उसकी सास घर लौटती है तो सुहानी की बात सुनकर वह उस पर यकीं नहीं करती।

''जाने किस से मुंह काला कर ली है और इल्जाम मेरे भतीजे पर लगा रही है! मेरे मायके वाले तुम्हें रास नहीं आते न इसलिए अपनी कुकर्म को मेरे भाई के लड़के पर थोप रही हो। अरे वह ऐसा क्यों करने लगा! अच्छा खासा शादीशुदा है वह।'' ''मां... मैं झूठ नहीं बोल रही, वह शराब पीकर....,'' कहते हुए सुहानी रोने लगती है।

''माना कि वह थोड़ा बहुत पी लेता है मगर...!'' कहते हुए सुहानी की सास दूसरी तरफ जाकर बैठ जाती है। घर में पूरी तरह सन्नाटा छाया हुआ था। विजय और उसके पिता रात में दुकान से लौटते हैं तो देखते हैं कि माहौल बदला हुआ है। सारी बात जानने के बाद विजय गुस्से से लाल–पीला हो रहा था। वह तुरंत पुलिस में शिकायत दर्ज करवाने के लिए तैयार हो जाता है लेकिन मां उसे रोकती है।

''पागल हो गया है क्या! इसकी बातों में आकर अपने मामा के लड़के को ही बलात्कारी ठहराने चला है? अरे... मेरा मायका बर्बाद हो जाएगा। इसकी तो कोई इज्जत नहीं रही लेकिन अब हर तरफ शोर मचाकर हमारी भी इज्जत को नीलाम करेगा क्या?''

''मां... तुम औरत होकर दूसरी औरत का दर्द नहीं समझ रही हो। रमेश दोषी है तो है। हम इसमें इज्जत और रिश्तेदारी क्यों देखें? क्या उसने हमारे बीच की रिश्तेदारी या इज्जत का ख़्याल रखा?'' विजय अभी भी गुस्से में था। ''क्या सबूत है कि मेरे रमेश ने ही ऐसा किया है?'' विजय को

शांत रहने के ख़्याल से उसकी मां कहती है। ''सबूत... वह तो खुद पुलिस ढूंढ लेगी। जब पुलिस के चार डंडे लगेंगे न तो वह रमेश खुद ही सारी बात ऊगल देगा। चलो सुहानी थाने।''

''रुको बेटा... तुरंत गुस्से में यूं फैसला करना ठीक नहीं। वैसे भी अब रात के समय बहू को थाने ले जाना उचित नहीं होगा। जो करना है सुबह करना।'' विजय को समझाते हुए उसके पिताजी कहते हैं। पत्नी की हालत देखकर विजय भी ठहर जाता है और सोचता है कि पहले इसे संभालना बेहतर होगा। मां के विरोध के बावजूद विजय रमेश के खिलाफ केस दर्ज करवा देता है। घर में विजय की मां और पिताजी का व्यवहार सुहानी के लिए पहले जैसा नहीं रहता। विजय की मां अपने मायके वालों के पक्ष में खड़ी दिखती है। इधर सुहानी से बलात्कार की खबर धीरे–धीरे एक दूसरे के कानों तक पहुंचते हुए पूरे मोहल्ले में फैल गयी। सुहानी के मायके वाले उसे अपने साथ ले जाना चाहते थे। सुहानी के मायके वालों का कहना था, ''हमारे घर की बेटी की इज्जत तो ससुराल वाले संभाल नहीं पाए अब उसका जीवन क्या संभालेंगे!''

लेकिन इस मुश्किल घड़ी में विजय अपनी पत्नी के साथ खड़ा रहता है, ''तुम कहीं नहीं जाओगी सुहानी। तुम मेरी पत्नी हो, सुख और दुख दोनों में हम एक दूसरे के साथ खड़े रहेंगे।'' लोगों के ताने और घर वालों के विरोध को झेलते हुए विजय और सुहानी रह रहे थे। इधर पुलिस और कोर्ट का भी चक्कर लगाना पड़ रहा था। दो महीने बीत गए, सुहानी की तबीयत बिगड़ने लगी थी। एक दिन कोर्ट से लौटते हुए वह चक्कर खाकर गिर पड़ी। विजय जल्दी से उसे डॉक्टर के पास ले गया।

प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टर ने बताया कि सुहानी गर्भवती है। यह सुनकर विजय थोड़ी देर के लिए सन्न रह गया। बलात्कार के कीचड़ से उपजा यह कीड़ा उसे अभी से अपने बदन पर रेंगता सा नजर आने लगा। उसने यहां तक सोचा ही नहीं था। सुहानी को तो उसने अपना लिया था मगर बच्चे को अपनाना उसके लिए दुष्कर कार्य जान पड़ता था। सुहानी जो मां बनने के लिए उतावली रहती थी आज यह सब सुनकर पीड़ा से भर गयी। वह मन ही मन सोचने लगी, ''उस घटना से मिले घाव भरने की कोशिश कर रही थी लेकिन यह बच्चा तो नासूर बन गया। हर पल उसे भयानक शाम की याद दिलाता रहेगा !'' विजय और सुहानी दोनों का मन उस बच्चे के लिए घृणित भाव से भर रहा था। वे इस अनचाहे बच्चों को अपनाना नहीं चाहते थे। दोनों ने मिलकर तय किया कि गर्भपात करवा देंगे। सुहानी उस गर्भ को नष्ट करने के लिए तैयार हो जाती है क्योंकि वह खुद ही उस अनचाहे गर्भ से नफरत कर रही थी। बिस्तर पर लेटे–लेटे सुहानी की आंख लग गयी थी कि उसे किसी नन्हे शिशु की आवाज सुनाई दी, ''आप मेरी हत्या कर रहे हैं! मैंने आपका क्या बिगाड़ा है? उस दुखद घटना का जिम्मेदार मैं तो नहीं।'' तुम जिम्मेदार नहीं लेकिन तुम उस कीचड़ से उपजे हो. कांटों से सजे हो। तुम्हें अपनी गोद या आंचल में स्थान नहीं दे सकती,'' सुहानी की अंतरात्मा से आवाज आती है।

''नहीं... मुझे अपनी गोद में स्थान दीजिए। अपने आंचल का सहारा दीजिए। मैं तो प्रकृति के नियम के कारण उपजा हूँ न, अब इसमें आपके प्यार की खुशबू नहीं कुछ दुखद पल के कांटे हैं। लेकिन उस भूल की सजा मुझे क्यों जो मैंने किया ही नहीं।'' ''माना कि गर्भ में तुम अपनी मर्जी से नहीं आयी लेकिन इस धरती पर तुम्हें कैसे आने दूँ! तुम मेरे जख्म की जीती जागती मूरत बनकर रहोगी,'' सुहानी का मन विचलित हो जाता है। ''मां...अपने जख्म को देखकर मेरी हत्या मत करो। नहीं मां... नहीं... !''

अचानक सुहानी बिस्तर पर से उठकर बैठ जाती है। वह खुद को पसीने से तर–बतर पाती है। उसे एहसास हो रहा था कि मानो वह किसी बुरे सपने से बाहर निकली हो। वह सामान्य होने की कोशिश करती है फिर विजय को जगाती है। ''सुनो... मैं गर्भपात नहीं कराऊंगी।'' ''तो फिर... ,'' सुहानी के मुंह से यह सुनकर विजय आश्चर्य में पड़ जाता है। तुम्हारी कमी के बाद भी मैं तुम्हारे साथ हूँ। मेरे साथ हुए दुष्कर्म के बाद भी तुमने मुझे अपनाया, मेरे साथ रहे। लेकिन इस गर्भस्थ शिशु ने तो कुछ नहीं किया ना फिर इसे किस बात की सजा! इस अधखुली कली को खिलने दो विजय। हम दोनों मिलकर उसे प्यार से पालेंगे।''

''लेकिन... !'' ''लेकिन वेकिन कुछ नहीं। हम दोनों एक दूसरे के साथ है न फिर इसके साथ क्यों नहीं! दुनिया तो आज भी कह रही है कल भी बोलेगी लेकिन हम तीनों एक दूसरे के साथ खड़े रहेंगे तो सुख की बगिया जरूर बसेगी।'' सुहानी की बात सुनकर विजय उसके हाथों को प्यार से अपने हाथों में लेता है और हामी भर देता है। ◆

पता : रेलवे हण्डर रोड, पश्चिमी लोहानीपुर, कदमकुआँ, पटना–800003

लाल चूनर

❑ अलका अस्थाना

माधो ने गट्ठर उतारा और सभी ने उसे आकर घेर लिया। कच्चे सूती धागे, साथ में कुर्ते साड़ियों के कपड़े, पूनम के हाथों में जादू था, उसकी कढ़ाई में बहुत हुनर था। दिन भर वो उन बेलबूटे के साथ खेलती रहती थी चाहे जितनी सघन बुनाई हो, वो बड़ी ही तल्लीनता से उसमें लगी रहती थी। लखनऊ की चिकनकारी पूरे विश्व में जानी जाती है। कच्चे धागे से बनाई गयी, साड़ियां कुर्ते देश–विदेश में जाने जाते हैं।

पूनम भी माधो के पास खड़ी है और कढ़ाई के लिए कपड़ों को मांग रही है। माधो ने मुस्कुराकर कहा–अरे, बिटिया क्या हुआ? बड़ी शान्त होकर खड़ी है।

पूनम ने अपना सिर नीचे झुकाया। कहा–दादा कुछ पैसों की जरूरत है। अम्मा की दवा लानी है।

माधो ने बड़ी खुशी से अपने कुर्ते के पैसे निकालकर पूनम को थमा दिये। दरअसल, पूनम ही है जो चिकनकारी करके पूरे घर का खर्च चलाती है। लखनऊ के पुराने मोहल्लों में गिना जाने वाला ये स्थान लोगों की जीविका का साधन बन गया था। गरीब लोग जिनको कोई रोज़गार नहीं था वे अपने घरों में बैठकर चिकनकारी करते थे। पूनम बहुत ही सुशील, देखने में बहुत ही सुन्दर थी। आज पूरी रात मां के माथे को सहलाती रही। मां के तेज बुखार चढ़ा है। कई बार लसोड़े का काढ़ा बना कर पिला चुकी है। पास ही में लगे लसोड़े का वृक्ष है कई बार वो पत्ते तोड़कर ला चुकी थी लेकिन मां की खांसी रुक नहीं पा रही थी।

भानू ने पूनम को देखा वह आज बहुत ही परेशान थी। उसका चेहरा दर्द से लाल हो रहा था लेकिन करे भी तो क्या ? कुछ सूझ नहीं रहा था।

छरहरी बदन की पूनम बड़ी ही मेहनती थी। कमर तक फैले उसके केश उसकी कौमार्यता को और बढ़ा रहे थे। कई बार भानू ने उसकी सहायता करने का प्रयास किया लेकिन वह मना कर देती थी।

शायद उसे किसी की भी सहायता लेना भाता नहीं था। भानू ने उसकी ओर सहायता की दृष्टि डाली और इशारा करने का प्रयास किया। उसकी आंखें प्रेम में सराबोर थीं। कहीं उसकी

आंखें पूनम के साथ को खंगाल रही थीं जहां प्रेम की एक परत थोड़ी–थोड़ी दिखाई दे रही थी पर हां की गुजांइश अभी भी दरवाजे पर खड़ी बेसब्री से इंतजार कर रही थी।

भानू तो पिछले वर्ष सी.ए. की परीक्षा पास कर चुका था। उसके परिवार में भी एक छोटी बहन थी श्रेया जिसे वह मां पिता दोनों का स्नेह देता था। भानू ने एक ही बार में सी.ए. की परीक्षा पास कर ली थी बहुत ही गरीबी में पले–बढ़े भानू सभी के लिए एक पैर से खड़े रहते थे। पूनम को वो बचपन से ही चाहने लगे थे। छत पर जब वो रात में टिमटिमाते तारों को देखते तो रात में अपने कॅरियर में उसको ढूँढते थे। उसका सादापन उसे भा रहा था। श्रेया भी डांस में अव्वल थी। कई बार वह ट्राफी जीत चुकी थी। 16 दिसम्बर को एक बहुत बड़े कार्यक्रम में अपने कॉलेज की ओर से भाग लिया था। उसने एमएस डब्ल्यू भी पूरा कर लिया था। साथ में सोशल वर्क भी करती थी।

भानू ने हिम्मत करके बड़ी तेजी से कहा कि पूनम चलो.. .! डॉक्टर के पास। मैं मां को लेकर चलता हूं। तुम मेरी बात क्यों नही मानती हो। इतना कहना ही था, उसके चेहरे का रंग बदल गया, और एक दूसरा भानू प्रकट हो गया, उसने पूनम की बांह पर हाथ रखा उसे किनारे किया और मां को गोद में उठाकर कार में लिटा दिया। उसे मां की कन्डीशन बिगड़ी सी लग रही थी। वह मन में सोच रहा था कि ये पूनम भी बस अपनी कहती है। कभी तो उसे मेरी बात माननी चाहिए। लेकिन बेचारी पूनम भी क्या करती, इतना पैसा भी नहीं था।

पूनम भौचक्का सी देखती रही। भानू की ओर उसकी दृष्टि में एक उभरापन था। उसे ये लगा कि भानू ऐसा भी कर सकते है। पूनम के होंठ बंद थे। शब्दहीन हो गयी थी। बस वह दुपट्टे से हाथ निकालकर बाहर की ओर दौड़ी। उसकी आंखों में अश्रु की धारा बह रही थी। भानू ने कार मोड़ी और तेजी से स्टार्ट की। जब तक वह आगे कोई शब्द बोलती। कार दूर तक जाते ओझल हो गयी थी।

शायद....!

वह अपने घर में अन्दर चली जाती है। तख्त के पास घुटना टेककर बैठ गयी लेकिन वो भानू को जानती थी कि वे जो कुछ करेंगे, ठीक करेंगे। वह भानू के अन्दर बहती निःश्छल धारा को अच्छी तरह पहचानती थीं। भानू कार को ड्राइव कर रहे हैं और कभी–कभी वे मां से बात भी कर रहे हैं। चच्ची क्या हाल है सब ठीक है न। मां की सांसों की रफ्तार बढ़ती जा रही है। भानू ने मां से कहा– चच्ची क्या हुआ, ठीक है न।

मां ने उत्तर दिया–हां SSS बेटा सब ठीक है। मां ने कांपते स्वर में कहा 'चिन्ता मत करो। भानू ने मां से कहा–चच्ची, बस थोड़ी देर में मैं हॉस्पिटल पहुंच जाऊंगा।

अरे ये क्या रेलवे लाइन बन्द हो गयी। यह अक्सर ही हो जाया करता था। डॉ. सेन बहुत अच्छे चेस्ट स्पेशलिस्ट हैं। रेलवे फाटक खुल गया था। सभी गाड़ियों से पूरी सड़क पर काफी जमावड़ा हो गया था। भर्र–भर्र। ये सांस के पेशेंट के लिए माहौल बहुत ही प्रदूषित है।

फाटक खुल गया था। भर्र–भर्र गाड़ियों का तांता बड़ी ही तेज रफ्तार में निकल रहा था जैसे कि किसी ने जेल से किसी को छोड़ दिया हो, तेज स्पीड में गाड़ियों को निकालना उसी में से भानू को अपनी गाड़ी को निकालना बड़ी ही टेढ़ी खीर था। वक्त आ गया। भानू गाड़ी को किसी तरह निकाल कर हास्पिटल पहुंच रहे हैं। थोड़ी ही देर में हास्पिटल का बोर्ड सामने दिखा। भानू ने गाड़ी रोकी और हास्पिटल से फोन करके वार्ड व्याय को सहायता के लिए बाहर बुलाया। मां को डॉक्टर को दिखाया। आज डॉक्टर सेन के पास ईश्वर की कृपा से पेशेंट नहीं थे उन्होंने मां को देखा। उनके फेफड़ों में बहुत इंफेक्शन हो गया था। कई गंभीर टेस्ट करवाने पड़े। एडमिट करवा दिया गया। उनका एक बड़ा सा हॉस्पिटल था जिसका नाम था 'सेंट मैरी' हॉस्पिटल। मां को भानू ने वहीं पर एडमिट करवा दिया। उनका ट्रीटमेंट चालू हो गया था। भानू ने नर्स के हवाले छोड़कर मां को छोड़ दिया, घर की ओर गाड़ी मोड़ दी। अंदर से घबराये भानू। एक तरफ मां का खांसता हुआ चेहरा, दूसरी और पूनम जो अकेली थी वह क्या बताते मां के बारे में वह सोच रहा था। उसने गली में गाड़ी को मोड़ दिया–देखा पूनम बाहर बैठी है और वह फिर गाड़ी से उतरा। पूनम की ओर आगे बढ़ा। उसने पूछा–भानू मां Sमां Sमां S कहां है, कहां मां को छोड़ आए हो। पहले एक कप चाय बनाओ, फिर बताता हूं। तुम बाहर क्यों खड़ी हो? बाहर खड़ी होने की क्या

जरूरत थी, मुझ पर भरोसा नहीं है क्या? इतना कहकर उसने थोड़ी नाराजगी जताई। जैसे वह पूनम से नाराज हो गया हो।

फिर पूनम ने उसकी ओर देखा। जैसे वह कुछ कहना चाह रही हो। उसने चाय की पैन गैस पर चढ़ा दी थी।

चीनी डालते हुए पूछा– अब बताओ भानू। भानू ने कहा– मां को थोड़ा इंफेक्शन हो गया है। डॉक्टर ने अपनी कस्टडी में उन्हें ले लिया है लेकिन घबराने की कोई बात नहीं है। सब ठीक है अभी हम हॉस्पिटल चलेंगे। मां को मैंने एडमिट करवा दिया है और चाय पीने के बाद हम दोनों साथ–साथ चलेंगे। उनका इलाज शुरू हो गया है तभी फोन की घंटी बजी। हॉस्पिटल से फोन था। भानू ने फोन को अटेंड किया।

ये तो डॉक्टर का ही फोन था। भानू थोड़े घबराए थे। चलो पूनम डॉक्टर साहब का फोन आया है। हमें तुरंत चलना होगा। पूनम ने जल्दी से घर को बंद किया फिर दोनों कार में बैठकर हॉस्पिटल की ओर चलते हैं। रास्ते में ट्रैफिक ज्यादा होने के कारण दोनों ही बहुत परेशान हो रहे थे। पूनम के चेहरे पर पसीने की छींटे देख भानू परेशान हो रहे थे लेकिन उन पसीनों की बूंद में भी पूनम बहुत अच्छी लग रही थी। भानू ने अपनी गाड़ी में सुंदरकांड का पाठ चला रखा था। वह पूनम को शीशे से देख रहे हैं। तभी नर्स का फोन आ रहा है, भानू ने स्पीकर पर फोन रखते हुए नर्स से बात की। नर्स ने कहा सर जल्दी आइए। सिस्टर ने बताया मां की कन्डीशन ठीक नहीं। पूनम उसे सुन रही है जी..... बस .. बस ...बस मैं आ गया। भानू हॉस्पिटल जल्दी ही पहुंच गये। भानू ने पूनम का हाथ पकड़ा और वो मां के पास वार्ड में गए। जहां मां की सांसें पूनम की प्रतीक्षा कर रहीं थी। डॉक्टर ने भानू को इशारा किया–कहा मां की कंडीशन बहुत खराब है। भानू ने डॉक्टर से कहा– डॉक्टर साहब जितना हो सके आप उन्हें ठीक कर दीजिए। डॉक्टर साहब आप पैसे की बिल्कुल चिंता न करें। भानू ने घबराते हुए कहा। डॉक्टर ने भानु से कहा सब गॉड के हाथ में है।

मैं सिर्फ कोशिश कर सकता हूं। आपने उन्हें लाने में देरी कर दी है। दोनों ही परेशान थे। थोड़ी देर बाद डॉक्टर ने पेशेंट से मिलने के लिए भी मना कर दिया। पूनम वेटिंग सीट पर बैठी है। उसके चेहरे पर फिक्र की लकीरें खिची हुई है। इस दुनिया में मां के अलावा उसके पास कोई भी नहीं था। अभी तक पूनम की जिंदगी मां के इर्द–गिर्द घूम रही थी लेकिन आज मुट्ठी में मां की सांसें उखड़ती सी दिखाई दे रही थीं। तभी किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। उसने पलट कर देखा। भानू खड़े थे। पूनम से भानू ने कहा –चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा। हम अपना कर्तव्य कर रहे हैं। मुझे तुम्हें बताना है, जो एक सत्य है जिसे तुमने स्वीकार करना होगा। मां अब इस दुनिया में नहीं है। पूनम मां के बेड की ओर तेजी से भागी। उसके होंठ सिसक रहे थे। आंसुओं से उसके गाल गीले हो गए थे। वह कमरे में गई मां की लाश से लिपटकर वह फफक–फफक कर रोने लगी। आज वह बिल्कुल अकेली हो गई थी। मां का क्रिया कर्म भी हो गया।

धीरे–धीरे जिंदगी आगे की ओर बढ़ने लगी। पूनम का मन कढ़ाई में बिल्कुल नहीं लग रहा था। जब भी कुछ काम करना चाहती थी, तो मां का बिस्तर, मां की पूजा का कमरा, मां की पूजा की घंटी की आवाज, पोई की पकौड़ियां, दाल की टिक्की जो उसे बहुत अच्छी लगती थी। उसकी आंखों के सामने वह सब दिखायी दे रहा था। आंगन का हरसिंगार, मां के रहने का एहसास दिलाता। अनार से लदा हुआ वृक्ष मां के सुर्ख होठों की तरह मुस्कुराता दिखाई दे रहा था। सहजन का झूलता हुआ वृक्ष। मां के दो कंधों की तरह दिखाई दे रहा था। सेम की बेल जिसका वह अचार बनाती थी अपने रहने का एहसास दिलाता था जो वह पूरे मोहल्ले में बुला–बुला कर देती थी। चाहे गुड्डी दीदी का घर हो। चाहे बुढ़वा दादा की झोपड़ी, चाहे मोनू पंडित का चबूतरा हो सबके यहां वह बुला–बुलाकर अचार बांटती थी।

कुछ दिनों तक लोग पूनम के पास आकर उसके दर्द की कमी को पूरा करने का प्रयास कर रहे थे। पुनिया बगल में रहती थी। पूरे दिन पूनम के साथ पीछे–पीछे घूमा करती थी। 12 साल की थी। बचपन से आज तक वह पूनम के साथ ही इधर–उधर घूमा करती थी। जो काम कहे, खुद करने लगती थी। जो कि पड़ोस में रहती थी पूनम को बहुत प्यार करती थी लेकिन वक्त कभी नहीं रुकता। पूनम ने अपनी हमउम्र बहुतेरी लड़कियों को चिकनकारी करना सिखा दिया था। अनेकों रंगों से रंगी कढ़ाई रंगीन धागे से

सजी साड़ी देखने लोग दूर–दूर से पूनम के यहां आने लगे थे।

इस तरह उसका काम बहुत अच्छा चलने लगा था। गरीब लड़कियों के रोजगार का साधन वह कुटिया बन गई थी। इस तरह पूनम ने मां के ही नाम से अपने कारखाने का नाम 'गीता की कुटिया' रख दिया था, जहां एक कमरे में सिलाई होती थी व एक कमरे में कलेक्शन सेंटर। जहां तैयार होने के बाद कपड़े रखे जाते थे। अब लोग उसके घर से कपड़े ले जाते थे। बच्चों के क्लॉथ कलेक्शन से लेकर बड़ों तक की साड़ी कुर्ते नए–नए पोशाकें आधुनिकता की परिचायक बन गयी थीं। लोग उससे ऑनलाइन भी कपड़े मंगवाने लगे थे। अब समय के साथ भानू शहर से बाहर चले गए थे लेकिन कंपनियों से उनका काम चलने लगा था। पूनम के साथ उनका मिलना –जुलना अब बहुत दूरी बनाता चला जा रहा था। कभी–कभी वे पूनम से फोन पर बात कर लेते थे।

भानू जब गए थे तो उन्होंने पूनम से पूछा था, पूनम तुम्हें क्या चाहिए। पूनम ने कहा था मेरे लिए अगर लाना है तो एक लाल चूनर ला देना, जिसे वह पूजा के समय सुबह ठाकुर जी की पूजा पहन कर करेगी। भानू को कई बड़ी कपनियों से भी काम मिल गया था। उसके ऊपर काम का दायित्व बढ़ता जा रहा था।

आज शरद पूर्णिमा का दिन था। भानू अपने कैंपस में छत पर चांद को देख रहे थे। उनके कंचन नैनों में पूनम का कौमार्य सौंदर्य भर गया था। उसके काले केश उसकी मीठी–मीठी बातें, उसके मृगनयनी जैसे नेत्र, स्वादिष्ट चटपटे आलू, उसे याद आ रहे थे। कभी वह बचपन के अल्हड़पन में खो जाता। कभी उसकी सुन्दर छवि नीम के पत्तों में झांकती दिखती। कभी वह पूनम के साथ अपने को खड़े दिखाई देता था। भानू स्मृतियों के हर स्वाद का लुत्फ ले रहे थे। लेकिन परिस्थितियों से वों बंध चुके थे। करते भी तो क्या करते। अब धीरे–धीरे पूनम का भी काम देश–विदेश तक फैलने लगा था। वह अपने कामों में भानू को भी ढूंढने लगी थी, जहां उसके जीवन की डोर बंध जाती बेंगलुरु में अपनी चिकन की फैक्ट्री में बैठी, जहां देश–विदेश के लोग उसकी साड़ियों को पसंद करने आते थे। कई महीनों से भानू का फोन नहीं आ रहा था।

ऐसा तो वह नहीं करते थे वीक में एक फोन तो उनका आता ही था। उनका फोन क्यों नहीं आ रहा है। वह सोच में पड़ गई पर उसका अता–पता नहीं था। वह किसी से यह बात नहीं सकती थी। जब भानू ने उसके कंधे को स्पर्श किया था। उस समय उसे कोई भी एहसास नहीं हुआ था लेकिन आज वह ख्यालों में भानू को याद कर रही थी। उसके स्पर्श को याद कर रही थी। शायद उसने उसे समझा ही नहीं था। उसके प्यार, उसकी प्यार की धड़कन, उसके स्पर्श के एहसास को वह यथार्थ रूप देना चाहती थी।

पूनम ने भानू से चूनर मांगी है। जब वह लेकर आएंगे तो वह उसे जरूर पहनाएंगे। आज पूनम के पास वह सब कुछ है, जिस किसी की उसको आवश्यकता थी। लखनऊ की चिकनकारी के रूप में पूनम का नाम एक उच्च श्रेष्ठ उद्योगपति के रूप में जाना जाने लगा। सआदतगंज जिस मोहल्ले में रहती थी। पुराना लखनऊ था। जहां पूनम का जन्म हुआ था और अच्छी कढ़ाई के लिए वह मशहूर थी। वहां के घरों को रोशन करने का उच्च दायित्व पूनम निर्वहन कर रही थी। पूनम बेंगलुरु में 22 वें तल पर बैठी है। उद्योगपतियों की मीटिंग ले रही है जहां सभी ऐश्वर्य से वह सम्पन्न है। फोन की बेल आती है। वह फोन उठाती है भानू का फोन है। उसने फोन को बड़ी ही तल्लीनता से उठाया। भानू तुम्हें खांसी क्यों आ रही है ?

आखिर क्यों क्या हुआ। पूनम मुझे तो कुछ नहीं हुआ भानू ने कहा– नहीं पगली कुछ नहीं मैं बिल्कुल ठीक हूं। बताओ क्या हाल है। पूनम ने कहा– अरे भानू आप इतने दिनों से कहां थे। मैं इंतजार कर रही हूं। भानू की हंसी में दर्द था फिर उसने पूनम की बात को टाल दिया। शायद वक्त ने उसे उतना समय नहीं दिया था उसे ब्लड कैंसर हो गया था।

पूनम से वह क्या कहता। कल्पना में सजी वह पूनम जिसे वह अपनी दुल्हन समझता था। ठीक 10 दिन बाद वह आकाश में विलीन हो गया था। पूनम, पूनम को उसने कल रात ट्वीट करके कहा था प्रिय गोटेदार लाल चूनर मैं तुम्हें अगले जन्म में दूंगा। जहां मेरी पूनम हमेशा मेरे सामने होगी। ◆

पता : 356/24, आलम नगर रोड, बावली चौकी
लखनऊ–226017

माघ मेला स्नान पर्व

डॉ. प्रवीण कुमार श्रीवास्तव

करते सूर्य प्रवेश है, मकर राशि में आन।
मानों पावन पर्व यह, मकर संक्रांति मान। (1)

खिचड़ी, पोंगल, लोहड़ी, अन्नकूट सब मान।
तिल के लड्डू जब बने, मकर संक्रांति जान।। (2)

देव जगें संक्रांति में, उत्तरायण हो भान।
दान पुण्य का है दिवस, मकर संक्रांति स्नान।। (3)

चावल होता चंद्र सम, उड़द दाल शनि देव।
हल्दी सम गुरुदेव हैं, हरा साग बुध एव।। (4)

घी समान सूरज कहें, तिल गुड़ पाचक खोज।
मकर संक्रांति स्नान कर, रखते खिचड़ी भोज।। (5)

उत्तरायण आरम्भ से, दिन होता है दीर्घ।
मात्रा बढ़े प्रकाश की, रातें हुई अदीर्घ।। (6)

मौनी अमावस्या

सूर्य धरा के मध्य में, चंदा सीधी रेख।
छाया पृथ्वी पर पड़े, रात अमावस देख।। (1)

महर्षि मनु की जन्म तिथि, मौन अमावस जान।
शास्त्रों के अनुसार ही, साधु संत सब मान।। (2)

रहें मौन व्रत भी रखें, करिये गंगा स्नान।
मन वाणी की शुद्धि हो, धर्म कर्म को मान। (3)

इष्ट विष्णु को पूजिये, करें ध्यान औ दान।
श्राद्ध और तर्पण करें, रख पितरों का मान।। (4)

पौष पूर्णिमा

महा माघ मेला शुरू, पौष पूर्णिमा जान।
साधु संत डुबकी लगा,करते संगम स्नान।। (1)

शुरू हुये शुभ कार्य सब, ध्यान औ अनुष्ठान।
चंद्र पूर्णता प्राप्त कर, ऊर्जा करे प्रदान।। (2)

दान पुण्य शुचि कर्म का, होता बड़ा महत्व।
संगम में डुबकी लगा, प्राप्त मोक्ष का तत्व।। (3)

बसंत स्नान

पीली चुनरी ओढ़ ली, खेतों ने ऋतुराज।
धानी धनिया की महक, बुला रही है आज।। (1)

सरसों लाही झूमती, पीत वस्त्र को धार।
यह स्वर्णिम उपहार है, खुशियों का त्यौहार।। (2)

ऋतु बसंत है आ रहा, जैसे ओ ऋतुराज।
शीतकाल होता विदा, झंकृत कर हिय साज।। (3)

सरस्वती पूजन करें, नव वर्ष को मान।
माँ सरस्वती दे रही, ज्ञान बुद्धि वरदान।। (4)

माँ सरस्वती अवतरित, ब्रह्मा मुख से आज।
महा सरस्वती जयंती, ज्ञान बुद्धि शुचि साज।। (5)

◆

पता : 8/219,विकास नगर, लखनऊ, 226022

कल हमारा है

रविशंकर पांडेय

बीत गईं काली रातें

सूर्योदय न्यारा है,
आज हमारा है
कल हमारा है।

सब जाति धर्म भाषा वाले
हैं बाहों में बाहें डाले
हम सब अपने हाथों से
अपनी किस्मत लिखने वाले,
है नई किरण फूटी
टूटी अब तम की कारा है।

पूरब में छाई लाली
चलो उठो अब दे ताली
कदम कुदाल संभालो साथी
कोई हाथ न हो खाली,

अब आराम हराम हमें
हम सब का नारा है।

हर दिन होगी दीवाली
अब हर दिल होगी खुशहाली
थाली भर खुशियां ले आए
हर शाम अपकी घरवाली,

अटल रहे विश्वास सभी का
ज्यों ध्रुवतारा है
आज हमारा है
कल हमारा है।।

◆

पत : गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ–226010

माँ अब भी वहीं है...

तसनीम असलम

हर सुबह तुझसे मिलने की उम्मीद लिए उठती हूँ,
तेरे नन्हे कदमों की आहट में अब भी जी उठती हूँ।

कोर्ट ने कहा– "तेरा हक अब माँ से जुदा है",
कागजों पर लिखी उस सजा को हर रोज सहती हूँ।

तेरे खिलौने अब भी वही सवाल करते हैं मुझसे,
"क्या हमसे भी अब उसका रिश्ता टूट गया है?"

तेरे बिना रसोई में स्वाद भी नहीं आता,
तेरी पसंद की चीजें अब भी रोज बनती हैं,
पर कोई खाने वाला नहीं होता...

तेरा बिस्तर अब भी हर रात बिछता है,
हर रात सिरहाने तेरी कहानियाँ रख सोती हूँ।

ना जानती हूँ तू कैसा है,
क्या हँसता है, या चुपचाप रोता है,
मुझे पुकारता है मन ही मन,
या मेरी याद से भी ख़ामोश होता है?

तेरे पापा तुझे मुझसे क्यों नहीं मिलवाते?
क्या माँ से मिलने के लिए भी अब इजाजत चाहिए?

ना कोई शिकवा है, ना कोई सवाल,
बस एक ख्वाहिश है–
तू एक बार आए,
मेरी गोद में सिर रखकर कहे–
"माँ, मैं आ गया..."

मैं उस पल में सारी उम्र जी लूंगी,
सारी पीड़ा, सारी तन्हाई, सब भूल जाऊंगी।

क्योंकि मैं अब भी माँ हूँ,
माँ अब भी वहीं है... वहीं खड़ी है... तेरे इंतजार में।

◆

पता : 7 सी/5, हैवलोक रोड कॉलोनी, निकट–योजना भवन, लखनऊ–226001 (उ.प्र.)

ग़ज़ल

संजय कुमार 'साहिल'
सहायक निदेशक

मुसीबतों का मारा हूँ, मुश्किलों का घेरा है
वक्त का ऐसा सितम है अपनों ने मुँह फेरा है

हाल क्या सुनाऊँ तुम्हें मैं अपने शहर का
जिस गली से गुजरा मैं हादसों का डेरा है

खामोशी की चीख को सुनिए जरा इधर
मासूमों की बस्तियों को कातिलों ने घेरा है

शबे–गम के जागे लोगों को क्या मालूम
सुबह हुई है या अभी भी अँधेरा है

गमे–बर्बादी में अफसोस का क्या तकल्लुफ
'साहिल' उसकी बर्बादी में जो साथ मेरा है।

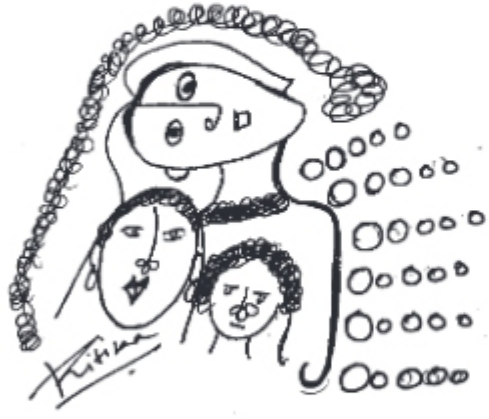

◆

पता : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग,
उ.प्र., पं. दीनदयाल उपाध्याय
सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ–226001

मन की राहें

विमल किशोर श्रीवास्तव

नहीं, हममें कोई अनबन नहीं है,
बस इतना है कि अब मन वहीं नहीं है।
तुम्हारी छवि अब भी उजली है,
पर मेरी नजरें भीतर कुछ ढूँढ रही हैं।

तुम्हें लेकर कोई उलझन नहीं है,
बस सवाल अब खुद से होने लगे हैं।
तुम्हारी यादें सुखद हैं, मीठी हैं,
पर अब कदम अपने रास्तों को पहचानने लगे हैं।

कभी लगता है जैसे तुम पास ही हो,
बातें वही पुरानी अब भी साँसों में बसी हैं।
पर सच्चाई यह है कि समय बदल गया है,
दिल की खिड़कियों से हवा नई बह चली है।

मैं अपने आप को सुलझा रहा हूँ,
बीते पलों की गांठें खोल रहा हूँ।
हर स्मृति को आदर से रखकर,
मैं अपने भीतर का रास्ता खोज रहा हूँ।

न कोई शिकवा, न कोई शिकायत,
बस अब मौन ही मेरी संगत है।
तुम्हारी जगह दिल में अटल है,
पर सफर अब मेरी आत्मा के संगत है।

मन की मृगतृष्णा"

क्यों होता है ऐसा हर बार,
मन माँगे सुख, मिले लाचार।
जिसको पाने को मन तड़पे,
वो मिलकर भी जाए दूँर पार।

सपनों का सावन आता है,
फिर सूखा मन रह जाता है।
हाथों में थी जो रोशनी,
वो छूते ही बुझ जाता है।

कभी हँसी बनकर मिलती खुशियाँ,
कभी आँसुओं में ढल जातीं।
मिलने की बेला पल भर की,
फिर यादों में ही रह जातीं।

क्या ये भाग्य का खेल है कोई,
या मन की अपनी चाहत है?
जो पास रहे वो भा न सके,
जो दूर रहे, वही राहत है।

हर इच्छा बनती है धुन कोई,
हर धुन अधूरी रह जाती।
शायद यही है जीवन का राग'
मिलकर भी दूरी रह जाती।

◆

पता : 16, आनन्दपुरम, सेक्टर–12, विकास नगर, लखनऊ–226022

जीवन की तरावट

बिपिन चन्द्र जोशी

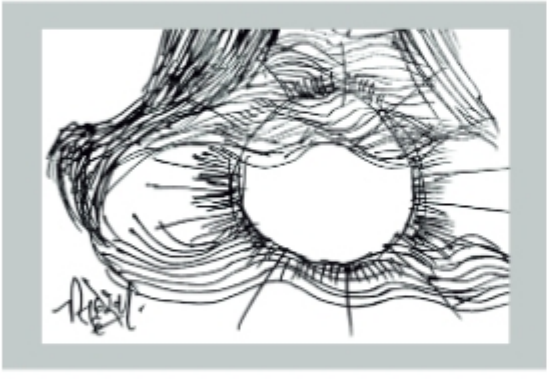

अक्षर, भाषा, लिखावट जीवन की
तरावट,
रोटी, कपड़ा, मकान जिंदगी की
घिसावट।
गीत, संगीत, साहित्य, दस्तकारी,
शिल्पकारी,
पग–पग रहा संघर्ष कौन जाने हर्ष
ऐसी दुनियादारी।
कभी अनुकूल कभी प्रतिकूल
मानव से ही होती है भूल,
नूतन और पुरातन जानो काँटों में
खिलते रहते फूल।
गुरु–शिष्य की परंपरा ही जीवन का
आधार यहाँ,
वसुधैव कुटुंबकम की महिमा
परमार्थ में सेवाभाव जहाँ।
प्रकृति की निःस्वार्थ सेवा जीवन
को विस्तार देगी,
धैर्य, संयम, तप को साधो नित नया
आकार देगी।

◆

पता : खलीलाबाद, संतकबीरनगर
मो. : 9984292091

बूढ़ी हुई उटंगन

□ डॉ. कंचन गुप्ता

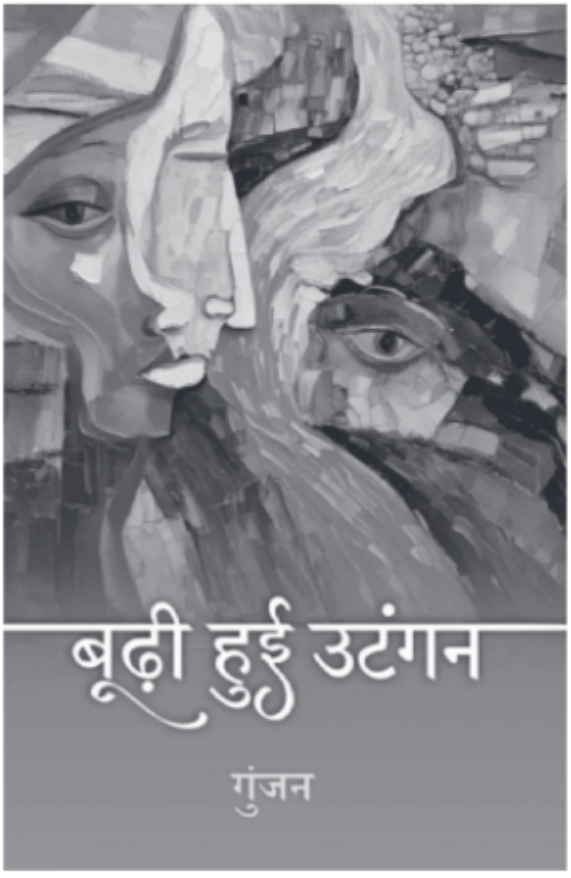

कविता क्या है? Wordsworth के शब्दों में कहें तो 'Poetry is the spontaneous overflow of the powerful teelings" अर्थात् कविता अनुभूतिजन्य संवेदनाओं का उद्दाम प्रवाह है और प्रो. गुंजन का प्रथम काव्य संग्रह 'बूढ़ी हुई उटंगन' की समस्त कविताएं गहन संवेदनाओं से युक्त हैं, जो हृदय को संस्पर्श करती हुई अपनी अमिट छाप छोड़ती हैं, या यूँ कहें कि सूखते निर्झर को रसमयी धारा से सराबोर कर जाती है। नए–नए आयाम गढ़ती ये रचनाएं नारी अस्मिता की पहचान कराती हैं, उसकी घुटन, पीड़ा, अंतर्द्वन्द्व को बयां करती हैं।

संग्रह की प्रथम कविता 'बूढ़ी हुई उटंगन' का शीर्षक ही मन को झकझोरने वाला है। उटंगन आगरा से बाह के बीच बहने वाली नदी है जो बूढ़ी हो गई है (सूख गई है) पर फिर भी अपनी तपस्या (साधना) में निमग्न है। उसे आशा है कि उसकी साधना फलित होगी। ''नई–नई कोंपलों से पुनः पुष्पित होगी/समाज के लिए कल्याणकारी होगी–नई कोपलें फूटेंगी फिर समाधि–पुष्पों से लहराएगी।'' (पृ. 52) यहाँ नदी प्रतीक है नारी मन का, नारी की तपस्या का, उसके धैर्य का, उसकी सहनशीलता का। कविता पुनः मन में आशा का संचार करती है।

कवयित्री के मस्तिष्क के विचलन को नारी की व्यथा, पीड़ा के रूप में व्यक्त करती यह कविता पौराणिक आख्यानों से गुजरती हुई भविष्य की स्नेहिल उष्मिता को रूपायित करती है। तम से प्रकाश की ओर ले जाती है, क्योंकि ये ''आँसू नहीं हैं/विश्वनिधि की अमरमणि है/जिनकी पवित्रता के आगे/सारी उज्जवलता, सारी धवलता/फीकी है। पृ. 52

इसी तरह से 'मार्ग से जाते हुए' कविता में मातृ भाषा हिन्दी को परित्यक्ता, असहाय, अबला,

व्यथित नारी, जो अपने ही घर में पराई हो गई, जिसे अपने ही बच्चों ने निराश किया हो, उसका करुण क्रंदन हृदय को झिंझोड़ देता है। उसे तो अपना भविष्य भी तब अंधकारमय दिखता है जब उसे सांत्वना भी अंग्रेजी में मिलती है– ''मैंने दे उसे सांत्वना/रक्षा की आस बंधाई/अकस्मात ही मेरे मुख से यूँ निकले शब्द/''डोन्ट वरी, आइ विल डू माइ बेस्ट'' /मेरे ये शब्द उसको तीर से चुभ गये/कोसती अपने भाग्य को/आशा के दीपक बुझ गये।'' पृ. 96

समाज में फैली चाटुकारिता को व्यंग्य के पैने बाणों से रूपायित करती कविता 'चाशनी' समाज के यथार्थ को उकेरती है। चंद पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–''कई बार जब ये चाशनी/जब हृदय के नेह से नहीं/प्रपंच के शक्कर से/बनती हैं और/पकती हैं स्वार्थ की/आँच पर/जला देती है चखने वाले का मुख और अंतस्थल। पृ. 46

इसी प्रकार 'कहाँ चली गई तुग' कविता सगाज में फैली विषगताओं पर क्षोभ व्यक्त करती हे। इस भौतिकता वादी समय में जब अर्थ ही सर्वोपरि होता है तो सारे रिश्ते–नाते मात्र छलावा मात्र ही होते हैं। पत्नी की मृत्यु के बाद पति के कथन में पत्नी वियोग की व्यथा नहीं अपितु धन लोलुपता ही झलकती है। ''कोई पंडित ही बता देता/तेरी माँ की उम्र है इतनी कम/तो क्या मैं न कुछ एलआईसी/ले लेता उसके नाम पर।'' पृ. 71

संग्रह की अधिकांश कविताएं संवेदनशील मन की उपज है, जो मन को झिंझोड़ती है, चिन्तन को विवश करती है, मन की घुटन, पीड़ा, संताप, उलझन, बेचैनी, समाज को ठीक न कर पाने की विवशता को रेखांकित करती है। समाज में घटित घटनाओं से उपजे 'यक्ष प्रश्न' मन को स्वतः ही विचलित करते हैं। कुछ न कर पाने की विवशता मन में असहनीय पीड़ा का बोध कराती है– ''मैं चाहती हूँ कि तुम्हारे कंधे जोर–जोर से/झिंझोड़कर पूछूं कि क्यों सहती हो सब जो/गलत है, गलत था, गलत होगा।'' पृ. 76

इस संग्रह की प्रत्येक कविता अपनी एक अलग कथा व्यक्त करती है जो कवयित्री के अनुभूतिजन्य व्यथा की गवाह है। ये कविताएं कहीं बुद्धि पक्ष और हृदय पक्ष के मध्य सामंजस्य बिठाती है तो कहीं पुरातन और अधुनातन के बीच राह खोजती है। कुछ प्रश्नों के उत्तर देती है तो कुछ प्रश्न छोड़ जाती है, कुछ नया गढ़ने के लिए।

सॉरी, औरतें, कठिन है बहुत रोज का संघर्ष, धूप का कोना, सीता तुम्हें क्यों देनी पड़ी अग्निपरीक्षा, खींचता है अतीत मुझे, मैं आज जब मिला हूँ तुमसे, बात समानता की चली, देह का प्रश्न, तुम श्रद्धा हो या इड़ा प्रिये, इत्यादि कविताएं कवयित्री की जीवन्त सोच की परिचायक हैं।

'ठूंठ' कविता में पुरुष के अहंजन्य परुषता के कारण प्रेम के शनै शनै विलीन होने का मार्मिक चित्रण है– ''पर यह वही पेड़ है/जिसे अपनी जिद के चलते तुमने कभी का कर दिया/शुष्क और रूखा/चाहकर भी नहीं सींचा/अपने प्रेम से। पृ. 115

'ताम्रपत्र से फ्लॉपी' कविता मानवता के ह्रास होने, विकास से विनाश की ओर अग्रसर होने की यात्रा है ''स्वर्ग की इच्छा में/की गई ये यात्रा/रथ से वायुयान/तक का सफर/आज होता है प्रतीत मानो यातना।'' पृ. 89

'सभी को इंतजार है' कविता कवयित्री की आशावादिता को व्यंजित करती है, जिसमें उन्होंने भविष्य की उन संभावनाओं को जाग्रत करने का प्रयास किया है वे कहती हैं 'जब लोग अपना दायित्व पहचानेंगे/मुझे इंतजार है/उस क्षण का/उस पल का/उरा विवेक का/जो अनुचित पर विराग लगाएगा।'' पृ. 127

कवयित्री की भाषा में सरलता है, सहजता है, प्रवाहमयता, बोधगम्यता है– विद्रोह का स्वर प्रबल है, विध्वंस के लिए नहीं अपितु नए सृजन के लिए। यह काव्य संग्रह आपकी सर्जनात्मक क्षमता तथा युगीन संवेदनशीलता का परिचायक है। ◆

पता : असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बैकुण्ठी
देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा

मनसर

–एस.एन. सिंह 'अघोर'

(1)

मन मोरे माषे प्रभु न्याय।
राउर विरूद पतित पावन जग, अघ–समूह जरि जाय।।
मो सों अघी, पातकी को है, काहे को बिसराय।
पुरुब जनम के पुन्य प्रगट भए, पायो मानुष काय।।
अहं, वासना, काम, क्रोध, मद, लीन्हें उर में छाय।
जौं जौं हौं चाहूँ उबरन को, भँवर–जाल फंसि जाय।।
अब तो कृपा करहु हे माधव, ग्रसन चहत गज–ग्राह।
तामस देह नाम नहि सिमरूं, नाहिन जप–तप जाग।।
सरजू तट पर बाट निहारूँ, कब अइहैं मोरे राम।
केवल एक भरोसो सिय–पति, विरूद न जइहैं जान।।

(2)

सरजू दरसन करिहउँ जाइ।
नित्य मज्जति जहं सदा सिय सहित रघुराइ।।
निकल मनसर बहत कल–कल चर–अचर बिलसाइ।
देव, ऋषि, मुनि, व्रती जप–तप करत मन हरषाइ।।
दॉय रख पुर अयोध्या, चलत मग हुलसाइ।
पंचकोशी परककर्मा करति रघपुति राइ।।
लगत मोरे पुन्य प्रगटे कोटि जनम के आइ।
पतित पावन मातु सरजू गोद में खेलराइ।।
रामसिय पितु मातु जहें, गुरू नगेश्वर नाइ।
आंजनेय द्वारपालक शोक तव जरि जाय।।

◆

पता : वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एटा–207001 (उ.प्र.)

भारत सरकार के रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या 33122/78
भारतीय डाक विभाग की डाक पंजीयन संख्या–एल.डब्लू./एन.पी. 432/2006

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रमुख प्रकाशन

उत्तर प्रदेश मासिक	:	समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार की मासिक पत्रिका समूल्य उपलब्ध एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।
नया दौर (उर्दू)	:	सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषय की एक उर्दू मासिक पत्रिका, एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।
वार्षिकी (हिन्दी/अंग्रेजी)	:	उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विस्तृत आंकड़ों एवं सूचनाओं का वार्षिक विवरण मूल्य रु. 325/– मात्र।

महत्वपूर्ण प्रकाशनों के लिए सम्पर्क करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र.
दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
उत्तर प्रदेश के समस्त जिला सूचना कार्यालय

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए विशाल सिंह, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ में मुद्रित